सफलता के सात वर्ष

वर्ष 7, अंक 6 इलाहाबाद मार्च 2008

विश्व स्नेह समाज

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक

कीमत 5 रुपये

आओ सुनामी की सुने

फांसी कबूल है पर शादी नहीं

चार कहॉनिया

ब्रज की होली का स्वरूप

प्रस्तावित

स्नेहाश्रम

आपसे सहयोग की अपील करता है

१.स्नेहालय (अनाथाश्रम एवं वृद्धाश्रम)
२.हिन्दी महाविद्यालय
३.चिकित्सालय
४.पुस्तकालय
५.प्रकाशन
६.गौशाला

इसमें समाज में तिरस्कृत वृद्धजनों व असहाय बच्चों के रहने खाने, अध्ययन, अध्यापन की सम्पूर्ण व्यवस्था, अध्यनरत छात्र/छात्राओं को अति आधुनिक पद्धति से रोजगार परक शिक्षण. अत्याधुनिक उपकरणों से परिपूर्ण गरीबों का निःशुल्क इलाज. विश्व के लगभग सभी बड़े लेखकों की पुस्तकें, पाठ्यपुस्तकों से परिपूर्ण, धार्मिक, सामाजिक, साहित्यिक व सभी प्रकार के प्रकाशन की व्यवस्था, दस हजार गायों को रखने की व्यवस्था तथा गौमाता के त्याज्य सामग्री को औषधीय उपयोग में लाने हेतु शोध/अनुसंधान की भी व्यवस्था.

नोटः

१. जो भी व्यक्ति/संस्था १० लाख या इससे ऊपर का सहयोग जिस मद में देगी उसके नाम पर उसका नाम रक्खा जाएगा. २. १ लाख तक का सहयोग देने वाले व्यक्ति के नाम पर कमरे का नाम, पुस्तकालय में ५ लाख देने पर पुस्तकालय का नाम उसके नाम पर कर दिया जायेगा. ३. आप सहयोग सीमेन्ट, बालू, ईट, छड़ व अन्य उपयोग की सामग्री देकर भी कर सकते हैं. ४. इन संस्थाओं को संचालन एक कमेटी के तहत किया जाएगा.
५. आप अपना सहयोग संस्था के **युनियन बैंक ऑफ इंडिया** की किसी शाखा से **खाता संख्याःएस.बी. ५३८७०२०१०००९२५६** में भी जमा कर रसीद भेज सकते है.

जनसहयोग द्वारा, जनसहयोग से, जन के लिए

सहयोग के लिए लिखें या मिलेंः

सचिव,
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान/
एल.आई.जी-१४४/९३, सेक्टर-२, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद
email: sahityaseva@rediffmail.com

विश्व राष्ट्रीय हिन्दी मासिक
स्नेह समाज

संपादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

सम्पादकीय कार्यालयः
एल.आई.जी.-६३, नीमसराय,
मुण्डेरा, इलाहाबाद -२११०११
मो०: ६३३५१५५६४६

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायालय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।

वर्ष : 7, अंक :6 मार्च 2008

मूल्य

कीमत एक प्रतिः रु0 5/-
वार्षिक : रु0 60/-
विशिष्ट सदस्य : रु0 100/-
द्विवार्षिक सदस्यता : रु0110/-
त्रैवार्षिक सदस्यता : रु0 160
पंचवर्षिय सदस्यता :रु0 260/-
आजीवन सदस्यः रु0 1001/-
संरक्षक सदस्य : रु0 2500/-

१.विशिष्ट सदस्यों का सचित्र संक्षिप्त परिचय एक बार प्रकाशित किया जाएगा.
२. आजीवन सदस्यों का पूर्ण जीवन परिचय सचित्र एक बार तथा प्रत्येक वर्ष २/३का विज्ञापन/संदेश निःशुल्क प्रकाशित किया जाएगा.
३.संरक्षक सदस्यों का एक बार पूर्ण जीवन परिचय, प्रत्येक वर्ष २/३ का विज्ञापन/संदेश निःशुल्क प्रकाशित किया जाएगा तथा उपहार स्वरुप प्रत्येक वर्ष अलग से २००रु० तक की पुस्तकें भेंट की जाएगी.
४. सबसे अधिक सदस्य बनाने वाले व्यक्ति को प्रसार श्री व विज्ञापन देने दिलाने वाले को विज्ञापन श्री से सम्मानित किया जाएगा.

अपनी बात

संतो के साथ युवतियां होना कोई नई बात नहीं

हमारे द्वारा पूज्य समाज के द्विग्दर्शक कहे जाने वाले संतो के साथ युवतियों का होना कोई नयी बात नहीं हैं. अभी पिछले वर्ष माघ मेला-०५ में मध्यप्रदेश के युवा संत के कैम्प में जब मेरे सहयोगी ने मिलने का प्रयास किया तो तथाकथित संत आग के पास अपने युवा संतो के साथ रसरेलिया बताने में मस्त थें. उनके कुछ वाक्य देखिए-'जानते हो जब रात को रास लीला चलती हैं तो युवक रासलीला कम देखते हैं उनके उनके अंग को दबाने का काम ज्यादा करते हैं. मैं भी जब पहले यहां करता था तो रात को भिन्न कैम्पों में हो रही रासलीलाओं में जाया करता था और किसी अच्छी युवती को देखकर उनके पास बैठ जाया करता था. और रास लीला कम प्रणय लीला ज्यादा किया करता था.'

हमारे सहयोगी ने आकर यह बात बताई. मैं कुछ देर बाद संत से उनके विचार लेने के लिए मिला. संत ने इलाहाबाद के एक चर्चित उद्योगपति घराने के अखबार के प्रतिनिधी का नाम व फोन नं० देकर उनसे बात करने को कहा और बोले कि वैसे अगर आपको मिलना हैं तो पांच सात दिन बाद आइए. मैं लगभग दस दिन बाद उनके कैम्प में उनसे मिलने गया. बाहर रासलीला चल रही थी. गेट पर एक वर्दी पहने, डंडा धारी खड़ा था. मैंने उससे महात्मा जी से मिलने की बात की. उसने कहा अभी स्नान कर रहे हैं. कुछ देर बाद उसने मुझे एक कुर्सी पर बैठाया. मैं बैठा रहा. तभी एक संत आया मैंने उससे अपने आने का प्रायोजन बताया तो उसने पहले आना कानी की. फिर कहा जब आपसे कहें हैं तो अंदर इधर से चले जाइए. मैं बेधड़क अपने साथी को बाहर बैठा चला गया. अंदर एक कुटिया में तथाकथित संत चार पांच युवतियों के साथ रंगरेलिया खेलने में मस्त थें. मैं अंदर का नजारा देखकर कुछ रूका और कुछ कदम वापस चलकर महाराज जी-महाराज की आवाज लगाई. तभी अंदर से आवाज आई कौन हैं कैसे अंदर चले आए. अचानक चार पांच बंदूक धारी आकर मुझे घेर लिए. खैर पत्रकार होने का परिचय जानकर मुझे बाहर बैठाया. लेकिन कैम्प से बाहर नहीं निकलने दिया. मैंने अपने साथी से संक्षिप्त में सारी बात बताई. तभी इलाहाबाद के एक अन्य रिर्पोटर आये और मुझ पर उखड़ कर परिचय पत्र की मांग करने लगे. हमारे साथी ने उनकी भाषा में ही जबाब देते हुए कहा आप कौन होते हैं परिचय पत्र देखने वाले पहले अपना परिचय पत्र दिखाइए और उनके अखबार के संपादक, व्युरो प्रमुख सहित कुछ खास पत्रकारों के पास चलकर बात करने को कहा. तब जाकर उस संवाददाता ने अपने तेवर नरम किए. और प्रेम की भाषा में अंदर चलकर बात करने को कहा. मैं अपने सहयोगी पत्रकार को बाहर बैठने को कहकर अंदर गया. मेरी खातिरदारी में पलके विछाएं कुछ युवतियों के साथ में संत महोदय खड़े थें.

मुझे कुछ न छापने के लिए लालच देने लगे. मेरे लिए फल व मिठाइयां मगवाई गई. मैंने उन्हें लेने से इनकार कर दिया. मैंने कहा जब दिमाग शांत होगा तब मैं मिलूंगा. मैं बाहर आ गया. मेरे पीछे-पीछे महात्मा जी, उनके गार्ड व पत्रकार बन्धु भी मेरी गाड़ी तक आए. मुझे अपने मीठी बातों में उलझाने का पूरा प्रयास किया. मेरे गाड़ी स्टार्ट करने से पहले ही एक झोले में कुछ फल व कुछ डब्बे मिठाइयॉ जबरदस्ती प्रसाद स्वरूप लेने की सिफारिश होने लगी.

जी.के.द्विवेदी

आपके विचार स्नेह के साथ

आजकी राजनीति गुंडो, काले धंधो वालों से प्रभावित हैं.

सम्पादक जी

विश्व स्नेह समाज का अंक मिला. धन्यवाद. अपनी बात पढ़ी. द्विवेदी साहब, भारत में लोकतंत्र आया ही कब है कि उसकी हत्या हो गई? गोरों के हाथ से सत्ता लेते ही नेता मनमानियां करने लगें. नेहरू ने कश्मीर की समस्या अपने हाथ में ले ली जो अब नासूर बन गई है. आजकी राजनीति गुंडो, लुटेरों, काले धंधो वालों से प्रभावित है.

आप पत्रिका के मालिक हैं और रचना की जिम्मेदारी लेखक पर डालते हैं? यह तो कलम के साथ स्पष्ट लिखित गद्दारी है. समाज के अन्तर्गत डॉ. माानव का लेख ज्ञानवर्धक एवं नैतिक बल प्रदान करता है. रामेश्वर वैष्णव/तरूण प्रकाश को सलाम. पन्ना १७ पर कवि सम्मेलन की रिर्पोट है पढ़कर आनन्द आ गया. कविजनों को बधाई. पन्ना २६-२७ पर तीन लोक संस्कृतियों के लोकगीतों से भरपूर जीवन मिठास प्रदान की. दिवाकर गोयल की मन से मन की बात ने दिल के पावन जज़्बातों को झकझोरा! शबनम शर्मा का खाना और फैसला दोनों क्लासिकल लघु कथाएं हैं. जैन साहिब के जिन्दगी के ख्वाबों को सलाम.

धर्म सिंह गुलाटी, बी-१/१४८, फिरनी रोड, संगरूर, पंजाब

पठनीय सामग्री को पाठकों तक पहुँचाना प्रबंधन में भी आपको स्थापित करता हैं.

आदरणीय द्विवेदी जी, प्रणाम

स्नेह समाज का अंक मिला. डॉ०रामकुमार वर्मा के जन्म शदी पर निकाला गया यह अंक विविध विषयों पर विभिन्न प्रकार से प्रकाश डालता हैं. आपका प्रकाशिय काल विशेषकर अर्थ की दृष्टि से तनावग्रस्त वातावरण में प्रति अंक में पठनीय सामग्री संकलित कर उनको पाठकों तक पहुँचाना प्रबंधन के क्षेत्र में भी आपको स्थापित करता हैं. आशा करता हूँ कि आप स्वस्थ्य हैं. नववर्ष की बधाई भी स्वीकारें.

सादर

राम चन्द्र शुक्ल(पूर्व जज), सम्पादक, साहित्यकार कल्याण परिषद, अवैतिक, काम्पलेक्स, निकट हाथी पार्क, रायबरेली,

इतने कम मूल्य में इतनी उम्दा पत्रिका निकालना वास्तव में एक सराहनीय कार्य हैं.

श्रीमानजी,

आपके स्नेह कृपा द्वारा प्रेषित रा.हि. मा. विश्व स्नेह समाज का अंक मिला. आपने जो सम्मान मुझे प्रदान किया हैं उस हेतु मैं आपका सदा सदा आभारी रहूंगा. देवरिया महोत्सव में बोलते हुए सांसद मोहन सिंह, उदीयमान व ऊर्जावान विधायक उदयभान करवरिया, विभिन्न समाचार जानकर खुशी हुई है. इस पत्रिका के माध्यम से आप राष्ट्रीय भाषा हिन्दी की जो निस्वार्थ भावना से सेवा कर रहे हैं वह काबिले तारीफ है. इतने कम मूल्य में इतनी उम्दा पत्रिका निकालना वास्तव में एक सराहनीय कार्य है. पढ़कर आनन्दित हुआ.

महेश प्रकाश व्यास,

लक्ष्मी कुंज, चैतीना कुआं, बीकानेरे

कृपया साथ चलें, कुछ कदम ही सही

प्रिय साथी,

मैं वाराणसी-जौनपूर की मूल निवासी हूँ. संभव व उचित प्रतीत हो तो कृपया साथ चलें, कुछ कदम ही सही. सहयोग भिजवाएं मेरी अपील को प्रकाशित कराकर सहयोगी तलाशने में तो सहायक बने ही.

राह जिलाने की भी अब निकाली जाए,
आज की बात हैं कल पे न टाली जाए।
नए ऐवनों की तामीर जरूरी हैं मगर,
पहले गिरती दीवार संभाली जाए।

निराश्रित नौनिहालों के लिए- **नीलम,** प्रभारी ज्योति अकादमी,

+++++++++++++++++++++

आदरणीय द्विवेदीजी, सादर प्रणाम

प्रभुकृपा से आप स्वस्थ, मस्त एवं आनन्द से होगें. पत्रिका हेतु रचनाएं प्रेषित कर रहा हूँ जो मौलिक, अप्रकाशित एवं अप्रसारित हैं.

पसंद आये तो इन्हें स्थान देने की अनुकम्पा कीजिएगा. शेष शुभ

रोहित यादव, रिर्पोटर, नवभारत टाइम्स, मण्डी, अटेली, हरियाणा

इलाहाबाद से प्रकाशित हर पत्रिका का स्वागत है

प्रिय महोदय, नमस्कार

विश्व स्नेह समाज का विशेषांक मिला धन्याबाद. इलाहाबाद से प्रकाशित हर पत्रिका स्वागत हैं क्योंकि मैं स्वयं १९५७-६४ तक इलाहाबाद में था. डॉ०राजकुमारी शर्मा 'राज' की ग़ज़ल अच्छी है.पत्रकारिता पर प्रकाशित आलेख पठनीय है. आज से यहाँ भी हिन्दी पत्रकारिता पर एक गोष्ठी हुई थी, जिसमें मैंने स्वतंत्रता पूर्व हिन्दी पत्रकारिता पर आलेख पढ़ा था. वह छप भी गया है. समाज और राष्ट्र के प्रति पत्रकार का दायित्व बहुत बड़ा है. खोजी पत्रकारिता के नाम से जो भी हो रहा है चिन्ता का विषय है.

भवदीय

भागवत प्रसाद मिश्र 'नियाज'

एफ.एफ.-४, बी, ब्लॉक, सन पावर फ्लैट्स, गुरूकुल रोड, अहमदाबाद-२८००५२

आपका सम्पादकीय विश्लषेण महत्वपूर्ण है.

प्रिय भाई,
विश्व स्नेह समाज का अंक मिला. सर्वोच्च न्यायालय के दूरगामी फैसले पर आपकी सम्पादकीय विश्लेषण महत्वपूर्ण है बांगलादेशी घुसपैठियें देश की एक ज्वलंत समस्या है. राजेन्द्र जी का लेख समसामयिक है. समाचारों की कटिंग्स भी नवीनता लिए है. कुल मिला कर अंक पठनीय बन गया है. बधाई स्वीकारें.
आपका **ज्ञानेन्द्र साज,** सम्पादक, जर्जर कष्ती, १७/१२, जयगंज, अलीगढ़-२०२००१
....
महोदय,
आपके पत्र की जानकारी 'तुमुल तुफानी साप्ताहिक से मिली. मैं हिंदी के समस्त देश के समस्त पत्र इकत्रित करने का प्रयास कर रहा हूँ. अभी तक ३५०० पत्र पत्रिकाएं संग्रह कर चुका हूँ. यदि आप अपने पत्र का कोई सा भी अंक मुझे भेज सके तो अनुग्रह मानूंगा.
रामगोपाल शर्मा 'बाल', २१, सिलावट गली, जनकूपुरा, मन्दसौर, ४५८००२, म.प्र.
....
मोहतरमा जी अदाब
जुलाई व सितम्बर का अंक एक साथ हासिल हुआ. जुलाई के अंक में फैयाज साहब का लेख पसंद आया. साथ-साथ खाकी साहब की गज़ल भी अच्छी लगी. भगवान दास जैन की गज़ल भी काफी पसन्द आई. सितम्बर अंक में कहानी 'कितना गहरा पानी भी अच्छी लगी. उम्मीद है आप यूं ही साहित्यिक सेवा करते रहेगें. अगले अंक के इंतजार में.
डॉ० मुहम्मद मुबीनकैफ, परसौना, बरेली, उ०प्र०
....
प्रिय भाई, अभिवादन लें.
दीपावली के प्रेरक प्रकाश पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं स्वीकारें. अपनी सद्यः प्रकाशित काव्य कृति 'नेति नेति नियति' की एक प्रति अलग साधारण डाक से समीक्षार्थ प्रेषित कर रहा हूँ.
राजेन्द्र तृशित, १०४ए/१६५, रामबाग, कानपुर-२०००१२
....
आदरणेय द्विवेदीजी
आशा है ईश कृपा से स्वस्थ होगें. आप द्वारा प्रेषित पत्रिका का जुलाई अंक मिला. धन्यवाद स्वीकारें. मात्र पांच रूपये मूल्य रखकर आप वास्तव में समाज ही महती सेवा कर रहे हैं. अपना स्नेह भाजन बनाने के लिए एक बारपुनः आपको कृतज्ञता ज्ञापित कर रहा हूँ.
ओमप्रकाश मंजूल, पीलीभीत, उ.प्र.
....
मा. सम्पादक जी
मैं एक हिंदी प्रेमी नागरिक हूं. हिंदी राष्ट्रभाषा संबंधी अधिक से अधिक जानकारी रखने की इच्छा रहती है. सो आप स्नेह पत्रिका का सालाना चंदा लिखकर भेज दीजिए. धन्यवाद.
आ०स०तरवड़े, बालाजी गली, मु.पो. सिंदखेड राजा, जिला-बुलडाणा, महाराष्ट्र
....

यह पत्रिका अन्य पत्रिकाओं से हटकर है

सेवा में,श्रीमान सम्पादक महोदय,
महोदय, मैंने आपकी पत्रिका का एक अंक पड़ा. पत्रिका को पढ़कर ऐसा लगा कि यह पत्रिका कुछ नया दे रही है साथ ही यह पत्रिका अन्य पत्रिकाओं से हटकर भी है. मैं भी दिल्ली से प्रकाशित नगर परिक्रमा पाक्षिक का अलीगढ़ से जिला संवाददाता हूँ.अतः मुझे आपकी पत्रिका की खास जरूरत है. आपसे विनम्र प्रार्थना है कि मुझे नियमित पत्रिका भेजवाने का कष्ट करें. आपकी अति कृपा होगी.
प्रवीन कुमार, संवाददाता, नगरपरिक्रमा, गांव सफेद का पुरा, पो० साधू आश्रम, हरथुआगंज, अलीगढ़-२०२१२५
....
प्रिय बन्धुवर,
युग परिवर्तन की बेला में, दीपावली आपको सपरिवार मंगलमय हो।
शिव की शक्ति,
मीरा की भक्ति,
गणेश की सिद्धि,
चाणक्य की बुद्धि,
शारदा का ज्ञान,
कर्ण का दान,
राम की मर्यादा,
भीष्म का वादा,
हरिश्चन्द्र की सत्यता,
कुबेर की सम्पन्नता,
लक्ष्मी की अनुकम्पा प्राप्त हो,
यही हमारी शुभकामनाएँ है.
श्रीनिवास के.पंचारिया, से.नि. जगदीश मंदिर के पास, गुलेदगुड्ड, कर्नाटक-५८७२०३
....
माननीय सम्पादक महोदय,
सादराभिवादन,
साहित्कार कल्याण परिषद पत्रिका रायबरेली के अंक के सौजन्य से आपका परिचय मिला. बड़ी खुशी हुई. कृपया 'विश्व स्नेह समाज' पत्रिका का नवीनतम अंक अवलोकनार्थ भिजवानें की कृपा करें. बहुत आभार रहेगा. पत्र-पत्रिकाओं के पारस्परिक आदान-प्रदान के सहयोग की अत्यन्त उदार एवं उपयोगी पृष्ठ भूमि को समुचित सुदृढ़ता प्रदान करने के लिए निरन्तर सम्पर्क एवं सहयोग बनाएं रक्खें.
आपके क्षेत्र से सम्बंधित तथा आपकी जानकारी में यदि कोई अन्य पत्र-पत्रिकायें हो तो कृपा पूर्वक उनका नाम व पूरा पता आदि भी भिजवायें. ताकि पारस्परिक सम्पर्क के क्षेत्र को और अधिक विस्तृत किया जा सकें. मेरी योजना पत्र-पत्रिकाओं की एक बृहद निर्देशिका प्रकाशित करने की हैं. बहुत सम्भव हैं निकट में यह साकार

रूप धारण कर सके.
अग्रिम धन्यवाद सहित तथा अविलंब पत्रोत्तर एवं पत्रिका की प्रतीक्षा में.
उत्तरा भिलाषी-
बी.एन.मुद्गिल, प्र.स. समाचार संघ,प्रेस सदन, गद्दी खेड़ी, रोहतक-०१, हरियाणा
....
आदरणीय द्विवेदी जी
सादर प्रणाम, नमन वन्दन
पत्रिका का अंक मिला. पढ़ा एक विशिष्ट सामग्री युक्त अंक में आपने सब कुछ समाहित किया है. इस हेतू साधुवाद. मैं ग्रामीण क्षेत्र में रह रहा हूं. ३५ वर्षो से निरन्तर लिख पढ़ रहा हूं. ८०० से ज्यादा रचनाएं प्रकाशित है. **डॉ० ओमहरित**, फागी, जयपुर-३०३००५
....
सम्पादक जी, सप्रेम बन्दे
आपकी पत्रिका अंक मिला. अंक बहोत ही खूबसूरती से ओतप्रोत भरा है. इतनी छोटी सी पत्रिका में प्रतियोगिताओं के साथ-साथ ढेर सारी जानकारी है. केवल तीन रुपये लेकर आपने हिन्दी प्रेमियों की सेवा का बीड़ा उठाया यह ज्ञात हुआ.
अभिनव ओझा लिखित 'जायज कमाई' पढ़कर बेहद गदगद हुआ. हराम की कमाई खाने के बजाय मरना बेहत्तर हैं.
कथा, कविताएं भी उतनी ही पठनीय संग्रहणीय है.
अपनी बात में 'भ्रष्ट्राचार शिष्टाचार का पर्यायवाची से पता चला कि भ्रष्टाचार को मूल से उखाड़ना ही धरती मां को बचाना है.**चंद्रशेखर देवाजी खुटेमाटे,**एम.क्यू. ३४१, निरूजईएचसीएल कॉलोनी, मु. सुंदर नगर, पो. पुनवट, जिला-रावलमाठ, विदर्भ, महाराष्ट्र-४४५३०४
आपके विचारों का स्वागत हैं. कृपया पत्रिका के अंक आपको कैसे लिखते रहें.

ofj"B lkfgR;dkj ,oa ofj"B funs'kd]
bykgkckn nwjn'kZu

श्री श्याम विद्यार्थी के सम्मानित होने पर हार्दिक बधाई

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान

lHkh ikBdksa dks gksyh dh gkfnZd 'kqHkdkeuk,W

vkjrh e)sf'k;k
iz/kkukpk;Z
Lo0 fd'kksjh nsoh dky fo|k eafnj] fnckjh iqj] cjgt] nsofj;k

fcYdby eq¶r
fdlh Hkh bZ;kn gu dks cck lhj dh ubZ ;kiqjkuh f'kdk;r gks rks
vk;qosZfnd nok vkS j lsou fof/k eq¶r ?kj cSBs eaxk,-dbZ yksxksa
vkSj MkWDVjksa us Hkh bl dk vPNk ykHk mBk;k gSA
lEidZ djsa ,oa jksx gks rks ml ls eqDr
gks dj eq[k dj ldrs gSa-
dh-ukjk;.kLokeh] 52@175] csykyk LVªhV] iq:"kokde] psUubZ&600084

जेनिथ परिवार की तरफ

से सभी नगरवासियों को होली की हार्दिक बधाई

la;kstd
v'kxj vyh] Qk;kukFk

izca/kd
lqjs'k;kno

iath-la%

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान

इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश

सम्पर्क स्थलः एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद
कानाफुसी-9335155949 **email**: sahityaseva@rediffmail.com

क्रमांक.............

सदस्यता आवेदन–पत्र

दो फोटो लगायें

सदस्य का नाम : ....

पिता का नाम :...जन्म तिथि ....

शैक्षिक योग्यता :..

लेखन/पत्रकारिता का अनुभव :...

मुख्य व्यवसाय : ....

कार्यक्षेत्र :..

स्थायी पता ग्राम/मोहल्ला :..

....

पत्र–व्यवहार का पता :..

सदस्यता शुल्क का विवरणः..

अन्य साहित्यिक संगठन जिससे आप जूड़ें हुए हों :...

....

आप हिंदी की किस प्रकार सेवा करना चाहते हैंः ....

दिनांक .... हस्ताक्षर सदस्य ....

संदस्यता के नियम

कोई भी व्यक्ति जो हिंदी सेवी हो या हिंदी में अभिरुचि हो रखता संस्थान की सदस्यता ग्रहण कर सकता हैं. सदस्यों की तीन श्रेणी निर्धारित की गई है. **साधारण सदस्य**-५०/-रुपये मात्र, **विशिष्ट सदस्य**-१००/-मात्र, **आजीवन सदस्यः** ५००/रुपये. सरक्षक सदस्यः १५००/रु० साधारण व विशिष्ट सदस्यता पॉच वर्ष के लिए मान्य होगी. विशिष्ट सदस्यों को विश्व स्नेह समाज मासिक पत्रिका एक वर्ष तक निःशुल्क प्रदान की जाएगी. इसके अतिरिक्त आप स्वेच्छा से साहित्य कोष के लिए १ रुपये से लेकर १०००००००००....../-रुपये तक जो भी आपकी सामर्थ्य हों देकर कोष की श्रीवृद्धि में मदद कर सकते हैं. आपके द्वारा दी गयी धनराशि स्नेहाश्रम के लिए प्रयोग की जाएगी.

शुल्क प्राप्ति रसीद

नाम ....

पता ....

से शुल्क रु0 .... (शब्दो में) ....

.... प्राप्त किया।

प्राप्तकर्ता का नाम व पता .... हं0 प्राप्तकर्ता

स्वयं भी पढ़ें और अपने परिचितों को भी पढाए

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

लोकप्रिय राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

'विश्व स्नेह समाज' के पाठकों को विशेष तोहफा. घर बैठे प्राप्त करें वर्ष भर में १२ अंक अपनी प्रिय मासिक पत्रिका

एक प्रति:रु०५/– **विशिष्ट सदस्य** : रु० १००/– **द्विवार्षिक सदस्यता** : रु०११०/–
पंचवर्षिय सदस्यता:रु०२७०/– **आजीवन सदस्य**:रु०११०१/– **संरक्षक सदस्य** :रु० २५००/–

☞विशिष्ट सदस्यों का संचित्र संक्षिप्त परिचय एक बार प्रकाशित किया जाएगा.
☞आजीवन सदस्यों का पूर्ण जीवन परिचय सचित्र एक बार तथा प्रत्येक वर्ष 2/3का विज्ञापन/संदेश निःशुल्क प्रकाशित किया जाएगा.
☞संरक्षक सदस्यों का एक बार पूर्ण जीवन परिचय, प्रत्येक वर्ष 2/3 का विज्ञापन/संदेश निःशुल्क प्रकाशित किया जाएगा तथा उपहार स्वरुप प्रत्येक वर्ष अलग से 200रु0 तक की पुस्तकें भेंट की जाएगी.

सदस्यों के लिए महत्वपूर्ण सूचना

सभी सदस्यों से निवेदन है कि अपनी सदस्यता राशि समय पर भेजकर नवीनीकरण कराते रहें. कृपया पता परिवर्तन की सूचना अवश्य भेजें. सही पते के अभाव में कई बार पत्रिका लौटकर वापिस आ जाती है. हमें नवीनतम पता, फोन नम्बर, मोबाइल नं. के साथ शीघ्र ही प्रेषित करने का कष्ट करें. पत्रिका के प्रथम पृष्ठ पर अंक की संख्या लिखी होती है. अतः जिस संख्या का अंक नहीं मिला हो उसकी सूचना दो माह के भीतर अपनी ग्राहक संख्या लिखकर भेजें ताकि पुनः अंक प्रेषित किया जा सके. **कृपया सदस्यता राशि, संपादक, विश्व स्नेह समाज के नाम निम्न बैंक खाते में जमा कराके हमें पे स्लिप की फोटो कापी भेजनें का कष्ट करें.**

विजया बैंक :

विशेष सदस्यता योजना में भाग लीजिए, अपने नाम, पता के साथ निम्न पते पर भेजें-

संपादक, 'विश्व स्नेह समाज',
एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११

izd`fr lekpkj

आओ सुनामी की सुने

✍ujs'k 'kkf.MY;

व्यक्ति ने अपने को व्यक्त करने के लिए अनेक भाषाओं का उपयोग किया है. लेकिन प्रकृति ने अपने को व्यक्त करने के लिए हमेशा एक ही भाषा का उपयोग किया है, वह है -मौन, यही उसकी सर्वयुगीय एवं सार्वभौमिक भाषा है. आओ सुनामी के माध्यम से प्रकृति की भाषा को सुनने समझने की कोशिश करते है-

पहली बात- मैं यहॉ सुनामी के माध्यम से लाखों व्यक्तियों की मृत्यु की चर्चा नहीं कर रहा क्योंकि आजकल तो बच्चे भी जानते हैं कि आत्मा मरेगी नहीं, शरीर बचेगा नहीं, फिर डर काहे का. वैसे भी लाखों व्यक्ति रोज घरों अस्पतालों में मर रहे हैं, फिर मरने वाले को क्या फर्क पड़ता है कि घर के किसी कोने में मरा या समुद्र किनारें. फर्क तो केवल जीवित को ही पड़ता. यह पत्र भी उन्हीं जीवित व्यक्तियों के लिए है, जो इस सुनामी के माध्यम से प्रकृति की भाषा को सुनना समझना चाहते हैं, और जीवन्त रहना चाहते हैं. क्योंकि प्रकृति को सुने-समझे वगैर जीवन सम्भव नहीं हैं और इतिहास भी गवाह है कि जिस जिस ने भी प्रकृति की भाषा को सुन-समझ लिया, वह आज तक, मर कर भी नहीं मरा. और जिस-जिसने इसको नहीं समझा, वह आज भी, जीवित होते हुए भी, पल-पल मर रहा हैं. यानी, मरा ही हुआ है.

दूसरी बात-मैं यहॉ सुनामी के माध्यम से उन लाखों व्यक्तियों, जो बेघर हो गये, उनकी भी चर्चा नहीं कर रहा. क्योंकि टी.वी. एवं अखबारों ने पहले ही जरूरत से ज्यादा चर्चा एवं अपील कर रखी है. फिर, यह भी किसी से छिपा नहीं है कि-जिन्हें बेघरों के लिए घर का इन्तजाम करना है, वे किसी चर्चा या अपील का इंतजार नहीं करेगें और जिसने अपने घर में छिप कर बैठने का फैसला कर ही लिया हो, उसने यह भी इन्तजाम कर लिया होगा कि ऐसी किसी चर्चा या अपील से कैसे बचना हैं. लेकिन! हम प्रकृति की सुनामीयों से बचने के लिए किस घर में छिपेगें? क्योंकि सारी प्रकृति एक हैं, कल हमारे घरो में, ना जाने किस रूप में प्रवेश कर जायें? तो, क्यों ना आज ही प्रकृति की मौन भाषा को सुन लिया जाये, समझ लिया जायें. आखिर क्या कहना चाहती हैं यह प्रकृति?

तीसरी बात- भारतीय संस्कृति में प्रकृति को मां कहा गया है, आधुनिक वैज्ञानिकों ने भी इसके जीवन्त होने की पुष्टि अपने रूप में कर दी हैं. लेकिन! क्या वाकई हम प्रकृति मां के साथ, मां जैसा व्यवहार कर रहे हैं? क्या वास्तव में आधुनिक वैज्ञानिक जीवन्त प्रकृति के साथ न्याय कर रहे हैं? आज यह बात किसी से भी छिपी नहीं है कि, आधुनिक मनुष्य प्रकृति मां की छाती से दूध नहीं, बल्कि खून पीने लगा है और विश्व के ७० प्रतिशत आधुनिक वैज्ञानिक इस बात की खोज में लगे हैं कि उनकी जीवन्त प्रकृति मां में, कहां-कहां, क्या-क्या छिपा पड़ा है एवं उसे कैसे आधुनिक टेक्नोलॉजी द्वारा खाने-पीने लायक बनाया जा सकता हैं. मनुष्य केवल अपने खाने-पीने तक सीमित रहता तो फिर भी गनीमत होती. मनुष्य तो अपनी बनाई मशीनों को भी इसी प्रकृति मां का खून, मांस मज्जा (पेट्रोल, डीजल, गैसा, कोयला) खूब धड़ल्ले से खिला पिला रहा हैं. मनुष्य की जनसंख्या तो फिर भी नौ महीने के हिसाब से बढ़ती हैं, मशीनों की उत्पादन संख्या पर तो कोई रोक-टोक हीं नही हैं और इसी को ही मनुष्य अपना विकास मानकर चल रहा हैं. तो क्या प्रकृति मां, इस सुनामी के माध्यम से व्यक्ति को विकास की दिशा परिवर्तन के लिये तो नहीं कह रही? कृपया सुने समझें.

चौथी बात-भारतीय सनातन परम्परा मे व्यक्ति को सृश्टि बनाने पर बहुत जोर दिया हैं. भारतीय ऋषियों को इस कार्य में व्यक्तिगत सफलतायें भी मिलती रही हैं. वैदिक ऋषि की घोषणा- वसुधैव कुटुम्बकम, कृष्ण का समग्र जीवन, बुद्ध की कण-कण मात्र के लिए करूणा, दयानन्द का सम्पूर्ण विश्व को आर्य बनाने का संकल्प, अरविन्द का अति मानस योग, आदि सभी इसी ओर प्रयासरत थें. लेकिन अब ऐसा लगता है कि, यह कार्य अब प्रकृति मां ने स्वयं अपने हाथ में ले लिया हैं. अब व्यक्ति के सामने बचने का कोई चारा नहीं हैं. कृष्ण बुद्ध, दयानन्द, अरविन्द की पूजा कर-करके तो हम अपने को बचाते रहे हैं. लेकिन! प्रकृति मां से कैसे बचेगें? क्योंकि प्रकृति व्यक्ति के बाहर हीं नहीं, व्यक्ति के अन्दर भी हैं. वैदिक ऋषि ने कहा भी है कि-यत् पिण्डे तत् ब्रहाण्डे. क्या गारण्टी है कि जो सुनामी आज दूर समुन्द्र में आई है, वह कल हमारे अन्दर से ना फूट पड़े? क्या यह सही समय नहीं है कि, हम प्रकृति मां के सुनामी रूपी संदेश को आज समय रहते सुन लें? और व्यक्ति से सृष्टि बनने की ओर अग्रसर हों.

अन्तिम बात-अब तक के इतिहास में व्यक्ति केन्द्र में था, इसलिए सारा पार्थिव जीवन व्यक्ति के चारों ओर घूम रहा था. आज प्रकृति मां केन्द्र में हैं. आज व्यक्ति की हालत वैसे ही हैं, जैसे सत्ता से बाहर कर दिये राजा की. अब केवल व्यक्ति को सृष्ट बनकर ही प्रकृति मां की शरण मिल सकती हैं और सृष्टि बनने के लिए उसे अपनी सारी सीमिताऍं त्याग कर असीमित बनना होगा. क्योंकि प्रकृति मां असीमित हैं, इसलिए वह अपने पुत्र व्यक्ति को सृष्टि बनने तक सुनामी रूपी संदेश देती रहेगी.

महामंत्री, अभिनव विश्व अभियान २८०, बैंक एन्क्लेव, लक्ष्मी नगर, दिल्ली-११००९२,

मुद्दा

वे कुत्ते नहीं हैं जनाब!

✍अरूण कुमार अग्रवाल

प्रिंट मीडिया में ग्रामीण संवाददाताओं की आज भी बड़ी दुर्दशा है. इक्का दुक्का अख़बारों को छोड़कर बाकी कोई भी संस्थान इन संवाददाताओं की मेहनत के एवज में उन्हें फूटी कौड़ी भी नहीं दे रहा है. आये दिन उन्हें झिड़कियां भी सुनने को मिल जाती है, वह अलग से. कई संस्थानों में तो ये ग्रामीण संवाददाता यूं फटकारें व दुत्कारें जाते हैं, मानों वे इंसान नहीं आवारा कुत्ते हैं.

यह सर्वविदित है कि कोई भी अखबार, बगैर ग्रामीण संवाददाताओं के अपना काम नहीं चला सकतें. हिन्दी अख़बारों में जिलों की तहसीलों, ब्लाक मुख्यालयों, कस्बों और यहां तक कि कहीं-कहीं छोटी-मोटी आबादी वाले बाजारों तक में संवाददाता तैनात हैं. उत्तर प्रदेश में ज्यादातर हिन्दी अख़बार ऐसे हैं, जिनके पास ग्रामीण संवाददाताओ की लम्बी फेहरिश्त हैं. ये संवाददाता अपनी क्षमता के मुताबिक काम भी कर रहे हैं. कभी कभार तो उनकी खबरें शहरी रिर्पोटरों को भी मात करती हैं, पर बदले में कोई उन्हें 'थैंक यू' कहने तक की जरूरत नहीं महसूस करता.

सच तो यह हैं कि हिन्दी अखबारों में ग्रमीण संवाददाता उसकी रीढ़ की हड्डी होते हैं. ये हिन्दी अखबार जितना शहरों में बेचे जाते हैं, देहात में उससे कम नहीं बिकते. दूसरी तरफ शहरों में तो अखबारों के वेतनभोगी रिर्पोटर बैठे हुए हैं और ग्रामीण इलाकों में यह जिम्मा अवैतनिक रिर्पोटरों के हवाले कर दिया गया हैं. ये संवाददाता अपने घर परिवार की जिम्मेदारियों का वहन करते हुए अखबारों को सामयिकी खबरें भेजने का काम बखूबी कर रहे हैं और इसी के चलते ये अखबार ग्रामीण क्षेत्रों में अपनी पैठ बनाये हुए हैं.

ग्रामीण इलाकों में इन अखबारों का प्रतिनिधित्व कर रहे लोगों के पास आय के अपने स्रोत है, उन्हें तो कोई खास परेशानी नहीं है. ऐसे लोग अखबारों से जुड़कर समाज में अपनी

अलग पहचान बनाने के प्रयास में लगे होते है. जिनके पास आय का कोई साधन नहीं है और वे बेरोजगारी की मार झेल रहे है. उनका ख्वाब यह रहता है कि कम से कम इसी बहाने उनका दायरा बढ़ेगा और वे अपना काम काज आसानी से चला सकेगें. ये संवाददाता सरकारी और गैर सरकारी विभागों तथा ग्रामीण क्षेत्र के नये-नये घटनाक्रमों से अपने अखबारों के जरिये लोगों को अवगत कराते हैं. कभी कभार ये संवाददाता क्राइम रिर्पोट में भी अब्बल साबित होते हैं. सभी जानते है कि अपराधों की ढेर सारी वारदातों की प्राथमिकी थानों में दर्ज नहीं होती. इनका भंडाफोड़ शहर में बैठे रिर्पोटर के बजाय ग्रामीण संवाददाता ही कर सकते हैं. शहरी रिर्पोटर तो पुलिस कंट्रोल रूम, थानों और मर्चुरी से मिली रिर्पोटों तक ही सीमित रहते हैं.

ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत इन संवाददाताओं के समक्ष खतरे भी बहुत है. शहरों में धड़ल्ले से रिर्पोटिंग के बावजूद जल्दी किसी रिर्पोटर पर कोई हाथ नहीं डाल सकता, जबकि ग्रामीण परिवेश इससे अलग ही है. देखा गया हैं कि जरा जरा सी बात में गांवो में झगड़े बढ़ते है.पुलिस की दखलदांजी भी ग्रामीण इलाकों में कुछ ज्यादा ही है. इसी के चलते ग्रामीण संवाददाता आये दिन पिटते है, उनके खिलाफ फर्जी मुकदमें तक कायम होते है, पर अफसोस इस बात का है कि जिला मुख्यालयों पर बैठे पत्रकार अपने ग्रामीण भाइयों की मदद के लिए कुछ नहीं कर पातें.

हालात यहीं तक सीमित हो तो और बात है. अब तो हालत यह है कि ग्रामीण संवाददाताओं को बड़ी हेय दृष्टि से देखा जाने लगा है. शहरी रिर्पोटर लाख निकम्मा हो, पर वह ग्रामीण क्षेत्र के योग्य संवाददाता को ऐसी दुत्कारती निगाह से देखता है, मानों यह कोई अवांछित प्राणी हो. खबरे यदि छूट रही हो तो संवाददाता को लताड़ सुननी ही पड़ेगी, अब तो कुछ संस्थान उन्हें सर्कुलेशन तथा विज्ञापन के काम में भी लगाने को बेताब रहते है. कोई संवाददाता यदि सर्कुलेशन और विज्ञापन के मामले में फिसड्डी है तो वह लाख अच्छी खबर लिखे, उसकी कोई कद्र नहीं हो सकती.

यही उपेक्षा भाव ग्रामीण संवाददाताओं को कुंठित कर रहा है. वे ईमानदारी

से खबर लिखना भी चाहे तो नहीं लिख पा रहे है. कभी उन पर आर्थिक दबाब प्रभावी होता है, तो कभी कुंठित मनोभावना और कभी कभी संस्थान की उपेक्षा. फिर भी बेमन से ही सही, वे खबरे भेजते है.

ऐसा भी नहीं है कि सारे के सारे ग्रामीण संवाददाता कुंठित ही हैं. कईयों की दुकानें अच्छी चल रही है. कई तो पेशेवर हो चुके हैं और एक ही नहीं कई अखबारों में समाचार प्रेषण का जिम्मा संभाल रहे है. तर्जुबा होने से वे अच्छा लिखते है और उनके सम्पर्क सूत्र भी बढ़िया है. कई की दिलचस्पी कोटा परमिट का फायदा लेने में रहती है, हालांकि यही बात शहरी रिर्पोटरों मे से भी बहुतों पर लागू होती है.

जो भी हो, विचारणीय मुद्दा यह है कि आखिर ग्रामीण संवाददाताओं की इतनी उपेक्षा क्यो है. कहने का तात्पर्य यह कि ग्रामीण संवाददाता को हेय दृष्टि से देखना अपनी अखबार की रीढ़ की हड्डी तोड़ने जैसा ही हैं. उनका शोषण तो हरगिज नहीं होना चाहिए. उचित यह होगा कि प्रकाशन संस्थान अपनी सुविधा और क्षमता के अनुसार अपने ग्रामीण संवाददाताओं को कुछ न कुछ दें. अंग्रेजी अखबारों की बात अलग है. उनको ग्रामीण इलाकों से कुछ खास लगाव नहीं हो सकता. इन अखबारों को देहात में पढ़ता ही कौन है. इसीलिए ग्रामीण संवाददाता अंग्रेजी अखबारों की जरूरत नहीं बन पाये है.

(यह लेख इलाहाबाद से विगत ३१ वर्षो से प्रकाशित अंतरराष्ट्रीय श्रोता समाचार, पाक्षिक,जो २७ जवाहर स्कावयर, इलाहाबाद की एक सम्पादकीय टिप्पणी है. इसके संपादक इलाहाबाद के प्रसिद्ध पर्यावरणविद और पत्रकारों के हित की आवाज उठाने वाले बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी पत्रकार है.

हास्य-विनोद

फांसी कबूल है पर शादी नहीं

शिवम् ने अपनी शिक्षा पूरी की और नौकरी पाने के लिए काफी प्रयत्न किया, किन्तु नौकरी थी कि मिली नहीं, और बिना धन के विवाह भी

सम्भव न था, अन्ततः शिवम् ने चोरी कर धन कमानें और धन कमाकर विवाह करने की योजना बनायी और एक रात निकल पड़ा चोरी करनें. चोपड़ा साहब का मकान खुला देखा और घर में घुसकर सबके सोने का इन्तजार करने लगा. देर रात चोपड़ा साहब घर पहुंचे, अभी वे घर में प्रविष्ट ही हो पाये थें कि एक उनकी हम उम्र महिला निकट पहुंची और अपने साथ चलने का आग्रह करने लगी. इतने में दो और उसी उम्र की महिलाएं चोपड़ा साहब को अपने साथ ले जाने का यत्न करने लगी निरूपाय चोपड़ा साहब मौन साधे खड़े रहे और औरते लड़ती रही. इसी दौरान पता चला कि वे तीनों चोपड़ा साहब की धर्म पत्नियां हैं, और चोपड़ा साहब उन तीनों के इकलौते पति.

खैर, चोपड़ा साहब की दो पत्नियॉ एक एक हाथ पकड़ कर घसीट रही थी, इतने में तीसरी ने उन्हें धकेल दिया और सीने पर बैठ कर गरजी, अब ले जाओं तुम दोनों इन्हें, मैं अब यहां से नहीं हटने वाली. शिवम् चोरी करने के लिए परिवार के सोने की प्रतिक्षा करते-करते तमाशा देख रहा था.

अन्ततः समय बीतता गया, असहाय चोपड़ा साहब जमीन पर पड़े रहे, पर पत्नी सीने पर तथा अन्य दोनों एक-एक हाथ पर कब्जा जमाये रही, इस तरह रात बीत गयी. प्रातः का समय हो गया, पड़ोसी जाग गये. घर का भयंकर शोर सुन कर पड़ोसी दरवाजें पर एकत्र हो गये. पत्नियां व्यस्त थी, और पति बेहोश. मजबूर चोर के रूप में घुसे शिवम् ने ही दरवाजा खोला पड़ोसियों ने हारे नेता की तरह बेहाल चोपड़ा साहब को देखा, उन्हें उठाया, पत्नियों से बचाया और अस्पताल के लिए रवाना किया, उन्ही में कुछ पड़ोसियों ने शिवम् से परिचय जानना चाहा, इस पर शिवम् ने सारा किस्सा सच-सच सुना डाला. जिसपर पड़ोसियों ने उसे थाने को और थाने ने उसे जेल भेज दिया.

शिवम् जज के सामने प्रस्तुत हुआ,

जज-क्या तुमने चोरी की?

शिवम्-नहीं हुजूर.

जज-क्यों नहीं की तुमने चोरी.

शिवम्-घरवालें सोये ही नहीं.

जज-न सोने की क्या वजह थी.

शिवम्- हुजूर, वजह तो उनकी तीन पत्नियां थी जो अपने पास रात को रहने के लिए चोपड़ा से जिद्द कर रही थी, इसी जिद्द में वे बुरी तरह घायल हो गये और रात भर झगड़ा चलता रहा और मुझे हुजूर चोरी करने का मौका ही नहीं मिला.

जज-अच्छा अब बताओं तुम्हें क्या सजा दी जाये, क्योंकि दोष साफ जाहिर हैं.

शिवमः- हुजूर, मुझे सारी सजा मंजूर हैं, मैं फांसी पर चढ़ने को भी तैयार हूँ, लेकिन हुजूर मैंने आजीवन कुआरा रहने का फैसला किया है, हुजूर मुझे विवाह करने का आदेश मत दीजिएगा, बस.

ब्रज की होली का स्वरूप

✍ MkW0 ¼Jherh½ jktdqekjh ikBd

होली का रंगमच पर्व प्रतिवर्ष भारतवर्ष तथा अन्य कई देशो में मनाया जाता है परस्पर आनन्द, उल्लास, उत्साह, उन्माद और रागानुराग का पर्व; रंग संग उमंग, तरंग, भंग, हुड़दंग, मृदंग, चंग और अनंग का उन्मत्तकारी पर्व है होली. हॅसी-ठिठोली प्रेम की बोली, रंगोली, मस्ती भरी टोली तथा रसिक हमजोली से भरी होली का विश्व व्यापी रूप विश्व बन्धुत्व की भावना को साकार करता है. हॅसना-हॅसाना, गाना-बजाना, गीतों के माध्यम से गाली सुनाना और मानवों को बहुरूपिया बनाना, गिले-शिकवे भुलाकर सबको गले लगाना एक दिव्य परिवेश की सृष्टि करता है.

होली का अपना इतिहास है. होली है-असत्य पर सत्य की जीत, अधर्म पर धर्म की जीत, कलुषता पर पावनता की जीत, तामसिक आसुरी प्रवृत्तियों पर सात्विक प्रवृत्तियों की जीत तथा नास्तिकता पर आस्तिकता की जीत. रात को होली जलायी जाती हैं जो कि मृत संवत्सर का प्रतीक है-जाते हुए संवत्सर का प्रतीक, इसीलिए नवोढ़ा को जलती हुई होली देखने से रोका जाता है. ऋगवेद में वर्णित है कि नवान्न की बालियों को आग में भूनने से ही होली का पर्व अस्तित्व में आया. वेदों का मुख्य अन्न जौ (यव) है अतः फाल्गुन पूर्णिमा को जौ की बालियों का ही प्रयोग होता था. इस काल तक खेत, गेहूँ, जौ की बालियों से लहलहा उठते थे. होलिका रुपी यज्ञ में नवान्न की बालियों को भून कर समर्पित करने से सभी को हार्दिक प्रसन्नता होती है. यही परम्परा आदि काल से चली आ रही है. होली जलाने के बाद रात्रि में गायन, वादन तथा नृत्य का भी विधान है-

“गीत वाद्यौस्तया नृत्यैः रात्रि सा नीयते जनैः।”

“व्रज चौरासी कोस में चार गॉव नित धाम।
वृन्दावन अरू मधुपुरी बरसानों नन्द गाम।।”

ब्रज मण्डल की होली अपने विशेष भक्तिपूर्ण स्वरूप के लिए प्रसिद्ध है.

यहॉ रंगों के साथ-साथ लड्डुओं और लाठियों से भी होली खेली जाती है. लाठी-डण्डों के मधुर प्रहार के साथ ही पुरूषो को महिलाओं के प्रेम-सने पोतनों (कोड़ो) का आनन्द भी लेना पड़ता है जिससे होली का उत्साह-उन्माद दूना हो जाता है. यहॉ की होली के लिए कहा जाता है-‘देखि-देखि मा ब्रज की होरी, ब्रहमा मन ललचाए‘। ब्रज की होली भगवान श्रीकृष्ण पर केन्द्रित है. यह कहावत भी चिर-प्रचलित है कि ‘सब जग मे होरी, ब्रज में होरा‘ होली मनाने के माध्यम से प्रहलाद की भक्ति और कृष्ण की रस रंग लीला को याद किया जाता है. किंवदन्ती है कि एक बार कृष्ण ने अपनी मैया से पूछा कि मैं काला हूँ और राधा गोरी है ऐसा क्यों? तब यशोदा मैया ने कहा कि राधा के मुख पर काला रंग लगा दो तब उसका रंग भी तुम्हारी तरह काला हो जाएगा. सम्भवतः तभी से होली पर मुख को विशेषतया काला करने की परम्परा शुरू हो गयी. सबसे अधिक मज़ेदार बरसाना की लट्ठमार होली होती है. यह गॉव मथुरा से लगभग ४२ किलोमीटर दूर है. राधा बरसाने की थी और कृष्ण नन्दगॉव के. प्रतिवर्ष नन्दगॉव के लोग बरसाना में होली खेलने आते है. इसकी प्रसिद्धी इतनी है कि देश देशान्तर से लोग यहॉ की होली देखने आते है.

सम्पूर्ण ब्रज में बसन्त पंचमी से ही होली का यह ४० दिवसीय महोत्सव प्रारम्भ हो जाता है. फागुन सदी अष्टमी को बरसाना से राधारानी की तरफ से उनकी सखियॉ कन्हैया को उनके सखाओं की टोली सहित होली का निमन्त्रण देने नन्द भवन आती है और गुलाल की मटकी लेकर नृत्य-गीत द्वारा ठाकुर जी को बरसाने के लिए बुलाती है-‘होली खेले तो आ जाइयों बरसाने रसिया‘। रात्रि में नन्द भवन में गोस्वामी समाज द्वारा पद-गायन के समय इस आमंत्रण का गुलाल प्रत्येक नन्दगॉव वासी को लगाया जाता हैं और फिर सभी ग्वाल आनन्द से भर कर गा उठते है-

“कान्हा नोइयों बुलाय गयी नथवारी
वा नथवारी को गाम न जानूॅ
बरसानों गॉव बताय गयी प्यारी।”

निमंत्रण मिलने के पश्चात् अगली नवमी को प्रातः नौ बजे नन्द भवन में यहॉ के सभी गोस्वामी समाज के ‘हुरियारे‘ अपनी सजी धजी ढालों के साथ एकत्र होते है. ठाकुर जी के प्रतीक स्वरुप ध्वजा को लेकर नन्दीश्वर महादेव व श्री नन्दबाबा यशोदा को सामने नाचते गाते हुए उनसे होली खेलने के लिए ‘बरसाना‘ जाने की अनुमति लेते है. वे गाते हैं-“बरसाने चलो खेलें होरी। पर्वत पे वृषभान महल हैं, जहॉ बसे राधा गोरी।” बरसाना में राधा रानी जी के मन्दिर में पहुॅच कर दोनों पक्षों के लोगों का संयुक्त गायन होता है. फिर रंगीली गली में नन्द गॉव

के हुरियारें बरसाना की हुरियारिनों से नोक-झोंक व हास-परिहास करते हैं जिसके विरोध में वे पुरूषों पर दनादन लाठियों की वर्षा करती है जिन्हें पुरूष अपनी ढालों से रोकते हैं. ऐसी लट्ठमार होली को देखने के लिए देवता और ब्रहमा भी तरसते है. नन्दगॉव के लोगों और लाड़ली जी के मन्दिर के गुंसाइयों की पत्नियों के बीच यह एक नाटकीय लड़ाई होती है. महिलाऍं अपने-अपने मुँह पर घूँघट डाले हुए लम्बी लम्बी बॉस की लाठियों से लैस रहती है जिनसे वे अपने प्रतिद्वन्दी पुरूषों के सिर, कन्धों और पीठ पर तेज और धमाकेदार प्रहार करती हैं जिन्हें पुरूष चमड़े की गोल ढालों और बारहसिंहा के सीगों द्वारा बचा कर आत्मरक्षा करते है.

फालैन की होली भी कम आकर्षक नहीं. यहॉ प्रहलाद कुण्ड नामक एक पवित्र सरोवर हैं. स्थानीय पंडित फालैन की नितपति 'फाड़ना' से करते हैं जो प्रहलाद के दुष्ट पिता के अन्त से सम्बन्धित हैं. कुछ लोग इसे 'प्रहलाद ग्राम' का विकृत रूप मानते हैं. कोसीकलां से ७ किलोमीटर दूर फालैन में विश्व प्रसिद्ध 'पण्डा मेले' में पण्डा के चमत्कार को देखने दूर-दूर से लोग आते हैं. मन्दिर में विखरते रंगों के मध्य समाज गायन की अनुगूँज मन को रंग रही थी. पड़ोसी गॉव गुहेता, विशम्भरा, महरौली, राजागढ़ी तथा सुपाना आदि से औरतें समाज गायन करती हुई विशाल होलिका की पूजा करती है. नवयुवा रसिया, होली, धमार आदि की मस्ती में नाच-कूद करते है. कुछ लोग नौटंकी, स्वांग का भी रास रचते है. यहॅ पर धधकती आग में सें पण्डा निकलने की परम्परा बनी हुई है. होली से एक दिन पहले मन्दिर में ज्योति रखी जाती है. रात्रि में होली खेली जाती हैं पश्चात पण्डा दूध की धार के साथ गॉव की परिक्रमा करता है. पण्डा जोत पर हाथ रखकर उसके ठण्डे होने की प्रतीक्षा करता है फिर होलिका में प्रवेश करता है. इसके बाद वह प्रहलाद कुण्ड में स्नान करके दहकते अंगारों से निकलता है फिर मन्दिर का महन्त उसे कम्बल ओढ़ाकर मन्दिर में दशनार्थ ले जाता है और फिर पण्डा सभी श्रद्धालुओं का अभिवादन स्वीकार करता है. यह पण्डा करीब एक माह तक तपस्या में लीन रहकर सभी की ऑखों के सामने धधकती आग से निकलने का साहसिक कार्य करता है.

कोसीकला के समीपवर्ती गॉव 'कठैन' के सुप्रसिद्ध हुरंगे में हुरियारों का अरहर की झागों से स्वागत होता है. राधारानी की जयजयकार के बीच बेर व सन्तरें फेंके जाते हैं जिन्हें श्रद्धालु प्रसाद रूप मे लूटते है.

पौराणिक मान्यता के अनुसार जांव को राधारानी का जन्म स्थल माना जाता हैं और बठैन दाऊजी महाराज व श्रीकृष्ण की बैठक मानी जाती है जो कालान्तर में अपभ्रंश होकर बड़ी बठैन व छौटी बठैन के नाम से प्रसिद्ध हुई. बठैन में तो चरण पहाड़ी नाम से एक स्थान हैं जहॉ आज भी भगवान श्रीकृष्ण के पैर बने है. बठैन का हुरंगा भी मनोरंजक है. यहॉ के हुरियारों हुरियारिनों को 'फगुआ देते है जिसमें सुहाग सिंदूर, बिन्दी, चुटीला, महावर व वस्त्रादि शामिल हैं. ढोल एवं नगाड़ों की धाप पर गाया जाता है-"चलौ अइयौं रे श्याम मेरी पलकन पे, लाला तोय बुला गयी नथवारी" इस प्रकार लोक गीतों पर आधारित नृत्य के साथ कांसे की थाली, झॉझ, मंजीरा, चिमटा आदि के वाद्ययंत्रों की संगत की जाती है.

दाऊजी महाराज के मन्दिर में होली समाज गायन की अनूठी परम्परा है. बसन्त पंचमी से आरम्भ होने वाला समाज गायन डोल पंचमी तक चलता है. ४५ दिवसों तक चलने वाले समाज गायन के पद अष्टछाप कवियें द्वारा रचित है. होलिकाष्टक के साथ ही समाज गायकी में नक्कारा और जुड़ जाता है. यह गायन शैली ब्रजमंडल की अपनी प्राचीन धरोहर का एक जीवन्त प्रमाण है. हुरंगा से पूर्व (२ दिन पूर्व) मन्दिर प्रांगण में बने हौदों में रंग सामग्री (टेसू व पलाश पुष्प) भिगोयी जाती हैं जिससे रंग तैयार होता है.होली के दिन मंदिर का ऑगन केसरिया रंग में डूब जाता है. पुरूषों के कपड़ें फाड़कर उनके बदन पर महिलाऍं कोड़े मारती है और हुरंगे की धूम मचाती है. मथुरा का प्रसिद्ध द्वारकाधीश मन्दिर भी होली की रंगत से देशी-विदेशी श्रद्धालुओं के सर्वाधिक आकर्षक का केन्द्र बना हुआ है. चतुर्वेद समाज द्वारा गायन वादन की सशक्त परम्परा का निर्वाह अत्यन्त सफलता पूर्वक होता है मन्दिर के पट खुलते ही भक्तजन अबीर-गुलाल की वर्षा कर देते है. यह दौर कई-कई घण्टों तक चलता है.

सारांशतः ब्रज की होली मे प्रेम है, रस है, उमंग है, उत्साह जोश मस्ती की रंगमयी धारा को प्रवाहित करने वाला होली का यह त्योहार जीवन को स्वीकारने की प्रेरणा देता है.

१६५, मानस नगर, मथुरा

रंगोली

आ गयी होली,
लेकर संदेश
प्यार का पैगाम
देश ....परदेश।
देखें न नजरें
अब कोई फसाद।
घर-घर उल्लास
मिटे अवसाद।
रंगो की बहार
हंसी की ठिठौली।
असत की धरा पर
सत की रंगोली।

इन्दिरा अग्रवाल, अलीगढ़

मुक्तक

होली हैं होली हैं.... फैली मनुहार
अबीर और गुलाल कौ लगौ अम्बार
नैनन की पिचकारी मांहि भर अनुराग
ठौर-ठौर पड़न लागी, प्यार की फुहार।
++++++++++++++++++++
नित्य दिवाली होली किसके घर मनती है
गली-गली की कीचड़ कमल नहीं जनती है
हार गया अंग-अंग लड़ने झगड़ने में
बात जब भी बनती हैं प्रेम से ही बनती हैं।
++++++++++++++++++++
प्यार तो बस प्यार है, किसी से भी हो जाये
दिल का एतबार क्या, किसी पर भी आ जाये।
इश्क पर टिका यहॉ, इस जहॉ का वजूद है
गले लगाये सबको जो, वहीं खुदा बन जाये।
++++++++++++++++++++
पद पैसे के लिए कहॉ तक दौड़ोगें?
सच्चे पथ से कब तक मुँह को मोड़ोगें?
चाहे नहीं चुकेगी तुम चुक जाओगे
होगें खाली हाथ जब जग छोड़ोगें।

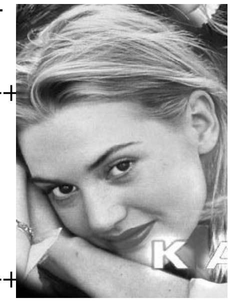

++++++++++++++++++++
जीत-जीत कर हार गये
तट से चल मंझधार गये
जो शोर मचाते तट पर
ना डूबे ना पार गये।
++++++++++++++++++++
ग़म से डाले हैं, फेरे दिलवर की तरह
खुशियॉ छूटी हैं, हमसे पीहर की तरह
देखा परखा सभी ने, अपनी अपनी नजर
बजते रहते हैं हम महुअर की तरह।

डॉ० इन्दिरा अग्रवाल, अलीगढ़

फागुन की बहार होली में

दिल होने लगा तेरे लिए बेकरार होली में।
गुज़र न जाए फागुन की बहार होली में।।
मुझसे निगाहें मत फेरों, आ जाओं पास मेरे।
और कितना करूँ मैं तेरा इंतजार होली में।।
तुम अपने हाथों से मुख में मेरे गुलाल मलो।
करों न इस बार मुझे बेकरार होली में।।
नई उंमगे नई आरजूऐं, नयी हसरतें लेकर।
कुछ तुम करों, कुछ हम करें, इजहार होली में।
इक तरफ जुआ तो इक तरफ दंगो का शोर।
इक तरफ मिल रहे गले, कुछ यार होली मे।।
इधर किस कदर आतिशे-तपिश की शिद्दत।
उधर जल रहा हैं दिल, 'सुहैल' दागदार होली मे।

गोरी हम पे न रंग तू डार।

गोरी पे न रंग तू डार।
देखों पिया खड़े हैं उस पार।।
लो फिर अंगना आ गयी होली।
फिर से भिगा दे उनकी चोली।
ले आज तू अपना कर्ज उतार।।
देखो पिया......
बालों में भर दे उनके गुलाल।
लाल फिर कर दे उनके गाल।।
आज पूरी होगी, मन की पुकार।।
देखो पिया......
रंग विरंगे रंग लेकर जइयो।
सखा सहेली संग लेकर जईयों।
तू करके अब सौलह सिंगार।।
देखो पिया......

xMkW0 ukS'kkc lgSynfr;kch] nfr;k] e-iz-

नव संवत् सर हो मंगलमय

मन को हरती रहे विखती,
अधरों पर मुस्कान अक्षय।
नव संवत् सर हो मंगलमय।।
शीस, केश के मध्य, रहें,
दिल हरता सिन्दूर अनय।
कन-खन कंकन की खनक,
व्यापे मंडल वाड्मय।।
होनी-अनहोनी बाधाओं से
पाये ममीर विजय।
भाल विन्दु की रजत चमक,
दिन दूनी बढ़े अथय।।
छागल की छम-छम छमक में,
सामाई 'भानु' विनय।
नव संवत् सर हो मंगलमय।।

भानु प्रताप सिंह 'क्षत्रिय', चकपैगम्बरपुर, सिधॉव, फतेहपुर,

vk/;kRe

ekul dh cgqiz;kstuh;rk

&dSyk'k f=ikBh

किसी ग्रंथ की उपादेयता उसकी प्रयोजनीयता पर आधारित हैं. ग्रंथ अपनी प्रयोजनीयता से ही सीमित या व्यापक होता हैं. रामचरित माानस आज समाज में आध्यात्मिक, सामाजिक एवं सांस्कर्षतिक चेतना के ऊर्जा केन्द्र के रूप में स्थापित हैं क्योंकि उसमें मानवीय जीवन से संबंधित विभिन्न तत्वों को सुन्दर संयोजन या समावेष हैं. जिसने इसे बहुप्रयोजनीय रूप में लाकर व्यापकता प्रदान की हैं. यहॉ मानस की बहुप्रयोजनीयता पर तान्त्विक विमर्षयुक्त एक विहंगम दर्षश्टि अपेक्षित हैं.

मनुष्य ने जब विभिन्न प्रकार की ध्वनि तरंगों और उनका जीवन पर प्रभाव जाना तथा वह अक्षर और शब्द के अविनाशी तत्व एवं उसकी व्यापकता से परिचित हुआ तब उसने विभिन्न वर्णो के उच्चारण से उत्पन्न ध्वनि तरंगों के पृथक-पृथक प्रभावों के आधार पर अक्षरों का संयोजन कर मंत्रों का सृजन किया. प्रारंभिक स्तर पर मंत्रों के शब्दों का संयोजन विभिन्न वर्णो के उच्चारण से उत्पन्न ध्वनि तंरगों के आधार पर किया गया. अतः उन शब्दों और शब्द समुच्चयों का अर्थ रहित होना स्वाभाविक था. इस प्रकार ध्वनि तंरगो के प्रभाव पर आधारित गढ़े गयें शब्दों से सृजित मंत्र अर्थहीन तो रहे परन्तु उनका वांछित प्रभाव देखा गया. अर्थात जिन प्रयोजनों से वे सृजित किये गये उन प्रयोजनों की सिद्ध उनसे हुई. इन मंत्रों को साबर मंत्र कहा गया. शास्त्रों में इन्हें भगवान शंकर द्वारा सृजित या उनके डमरू से निकला बताया गया. ‘शिव‘ शब्द कल्याण का पर्याय हैं. प्राणि मात्र के कल्याण के प्रति समर्पित ऋषि कल्याण रुप अर्थात् शिव स्वरूप अर्थात शिव स्वरूप ही हैं. मानस में गोस्वामी जी ने तत्संबंधी संकेत इस प्रकार किया है-

कलि विलोकि जग हित हर गिरजा।
साबर मंत्र जाल जिन्ह सिरिजा।
अनमिल आखर अरथ न जायू। प्रगट प्रभाउ महेस प्रतापू। बा.का.१५/३

कालान्तर में मनीषियों ने प्रयास किया कि क्यों न इन शब्दों को इस प्रकार गढ़ा जाय कि वे ध्वनि तंरगो के प्रभाव से निहित प्रयोजन की तो सिद्ध करें ही उनका सम्यक अर्थ भी हो. उनमें निहित हो चिन्तन, दर्षन या किसी देवता विशेष की प्रार्थना. अर्थात स्वर्ण में सुवास. अभिप्राय यह कि मंत्र रूपी उन विशिष्ट वाक्यों या शब्द समुच्चयों से एक साथ दो या दो से अधिक प्रयोजनों की सिद्धि. ये हैं वैदिक मंत्र जैसे -गायंत्री या महामृत्युंजय आदि. पुनः अगले स्तर पर मनीषियों ने मंत्रों को और अधिक उपादायी बनाने हेतू उनमें गेयता का समावेश करके उनके अर्थो का ऐसा सयोंजन किया कि उनसे देव विग्रहों का शोडषोपचार पूजन भी हो सके और उनकी स्तुति भी. अर्थात् स्तोत्र के रूप में मंत्रों का संकलन. यथा-श्रीसूक्त एवं पुरूष सूक्त आदि. इनमें मंत्र शक्ति के साथ अन्य तत्वों का भी सम्यक समावेश हैं. अर्थात एक रचना से कई प्रयोजनों की सिद्धि. विभिन्न प्रयोजन मूलक होने पर भी यह वैदिक मंत्र जन सामान्य की वरिधि में नहीं आ पायें क्योंकि वे लोक भाषा में नहीं थें.

इसी प्रकार वेद-उपनिषदादि जन सामान्य की पहुॅच से बाहर वर्ग विशेष में ही सीमित रहें क्योंकि इनका प्रयोजन था आध्यात्मिक दर्शन का प्रस्तुतीकरण. अतः इनकी उपादेयता वर्ग विशेष के लिए ही थी. बाद में मनीषियों ने सोचा कि ग्रंथों को बहुउपयोगी बनाने हेतु उनका प्रणयन इस प्रकार किया जाए कि वे सभी के लिए रूचिकर और उपादायी हों. उनमें समाहित हो इतिहास, भूगोल, खगोल के साथ दर्शन तथा मानवीय जीवन से संबंधित अन्य विभिन्न तत्व भी. आध यात्मिक चेतना, सामाजिक चेतना, राष्ट्रीय चेतना का सम्यक समावेश. इसके लिए उसमें कर्म योग, भक्ति योग, ज्ञान योग, सांख्य योग आदि आध्यात्मिक विषयों के साथ लौकिक उत्कर्ष, सामाजिक लोक रीति-नीति आदि को संयोजित किया जाए. यहीं नहीं वे काव्य, नाटक, संगीत, उद्‌बोधन आदि गुणों से भी युक्त हों. जिससे वे व्यापक हो सकें. जो जिस प्रयोजन से उन्हें पढ़ें उसके उस प्रयोजन विशेष की उनसे सिद्धि हों. यहीं नहीं यदि सामान्य जन उन्हें केवल मनोरंजन की दृष्टि से पढ़े तो उसका मनोरंजन भी हों. पुराण और उपपुराण इसी प्रकार के ग्रंथ हैं.

मानसकार ने भी ‘मानस‘ को व्यापकता प्रदान करते तथा जन सामान्य से लेकर समाज के विभिन्न वर्गो के लिए समान रूप से उपादायी बनाने हेतु उसमें बहुपक्षीय मानवीय जीवन से संबंधित विभिन्न तत्वों का समावेश किया हैं. इसमें साधान, चतुष्टय नाम, रूप, लीलाधाम के साथ भक्ति तत्व, ज्ञान तत्व, कर्म तत्व, ध्यान सांख्य, दर्षन विशयक आध्यात्मिक चेतना तथा इतिहास, भूगोल, ज्योतिष, शकुन, व्यवहारिक लोक रीति-नीति सहित लौकिक उत्कर्ष और अपकर्ष के कारकों का सुंदर सामंजस्य हैं. स्वानुभूतियों की दृढता हैं. साथ ही इसे काव्य, नाट्‌य, संगीत या गेयता आदि के संयोग से जन सामान्य कि सीमाओं मे लाया गया हैं. यहीं नहीं मानस को सर्वसाधारण के समीप में लाने हेतु तुलसी ने इसकी रचना लोकभाशा में की. वे यह स्पष्ट रूप से समझते थे कि यदि वे इसकी रचना देवभाषा संस्कृत में की जाएगी तो इसकी बहुप्रयोजनीयता समाप्त हो जाएगी और ग्रंथ वर्ग विशेष में सीमित हो जायेगा. यहॉ तक कि उन्होंने मनोरंजन

की मानवीयवृत्ति को दृष्टिगत करते हुए 'मानस' में हास्य एवं मनोविनोद को भी पर्याप्त स्थान दिया हैं. तत्संबंध में वे बुध ा विश्राम सकल जन रंजन से इसकी बहुप्रयोजनीयता की ओर संकेत करते प्रतीत होते हैं. वे जानते थे कि मनोरंजन, लौकिक उत्कर्ष, सामाजिक चेतना, कामना पूर्ति आदि के प्रयोजन से ग्रंथ के संपर्क में आने वाला भी कभी न कभी उसके दार्शनिक तत्व (आध्यात्मिक चेतना) तक भी पहुँच सकता हैं. यदि ग्रंथ में केवल दर्शन होगा तो लोग जो सासांरिक सुखको ही सुख मान रहे हैं, जिनकी दर्शन या आध्यात्मिक चेतना के प्रति रूचि नहीं हैं,वे ग्रंथ के संपर्क में आयेगें ही नहीं. पहली आवश्यकता यह है कि किसी न किसी निमित्त सर्वसाधारण को ग्रंथ के संपर्क में लाया जाए. इसके लिए आवश्यक है ग्रंथ का बहुपक्षीय होना. अर्थात उसकी बहु प्रयोजनीयता. तुलसी की यह अवधारणा सही थी. वे मनोरंजन, लौकिक उत्कर्श, कामना पूर्ति, रीति-नीति आदि के माध्यम से जन सामान्य को आध यात्मिक चेतना तक पहुँचाने में सफल हुए. बेल्जियम के फादर कामिल बुल्के तथा रूस के ए.पी. वरान्निकोव आदि विदेशी विद्वान साहित्यिक अध्ययन या अपनी भाषा अंग्रेजी या रूसी में अनुवाद के प्रयोजन से 'मानस' के संपर्क में आये और बाद में वे उसकी आध्यात्मिक चेतना तक पहुँचें. विषयी जीव को आध यात्मिक चेतना तक ले जाना सहज नही हैं. मनीषियों ने मनुष्यों की समाज वृत्ति, लोभ वृत्ति, मनोरंजन वृत्ति आदि के माध्यम से जनसामान्य को आध यात्मिक चेतना तक पहुँचाने में सफलता पाई हैं. नव सृजित साहित्य बहु प्रयोजनीय न होने के कारण वर्ग विशेष में सीमित होता गया. अधिकांश पुस्तके किसी एक प्रयोजन विशेष की पूर्ति में सहायक हैं. उन्हें केवल वही पढ़ेगा जिसके प्रयोजन की उससे पूर्ति होगी. मनोरंजन की दृष्टि से व्यक्ति हास्य व्यंग्य या चुटकुलों की पुस्तक पढ़ेगा न कि दार्शनिक ग्रंथ. धीरे-धीरे साहित्य में बहुप्रयोजनीय ग्रंथों का अभाव होता गया. जिससे साहित्य के प्रति समाज की उदासीनता बढ़ती गयी. मानस की बहुप्रयोजनीयता का एक अन्य संकेत दृष्टव्य हैं. श्रीराम राज्याभिषेक की फलश्रुति में गोस्वामी जी लिखते हैं कि

महाराज कर सुभ अभिषेका। सुनत लहहिं नर बिरति बिबेका।।
जे सकाम नर सुनहिं जे गावहें। सुख संपति नाना विधि पावहिं।।

अर्थ स्पष्ट हैं कि -राम राज्याभिषेक के इस चरित को जो सुनेगा या गायेगा उसे विरति और विवेक की प्राप्ति होगी. पुनः आगे लिख दिया कि इसी चरित को यदि सकाम व्यक्ति सुनेगा या गायेगा तो वह नाना विधि सुख सम्पत्ति प्राप्त करेगा. उसी चरित्र को पढ़ने, सुनने या गाने का फल विरति और विवेक और उसी चरित का फल नाना विधि सुख और सम्पत्ति। अर्थात उसी से योग और उसी से भोग. एक ही चरित में योग और भोग दोनो के दर्शनों का सम्यक समावेश. यह पाठक या श्रोता पर निर्भर है कि वह योग चाहता है या भोग. कैसे हो सकते हैं एक ही वस्तु के दो अलग-अलग विपरीत फल? इस शंका के कारण 'मानस' की यह फल श्रुति मिथ्या प्रतीत होती हैं. यद्यपि मिथ्या नही हैं. आज सम्यक विचार के बिना ग्रंथों में उल्लिखित इस प्रकार की फल श्रुतियों को लोग मिथ्या मानने लगे हैं. पहली षंका यह है कि कोई काव्य या काव्यांश योग या भोग कैसे दे सकता हैं? इस शंका का मूल कारण यह है कि प्रायः लोग यह जानते ही नहीं है कि साहित्य मनुष्य के अन्तःकरण को किस प्रकार और किस सीमा तक प्रभावित करता हैं? साहित्य का मनोवृत्तियों से तथा मनोवृत्तियों का कर्म एवं कर्मफल से क्या संबंध है? प्रार्थना शक्ति, शब्द की ध्वनि शक्ति कितनी हैं तथा वह किस प्रकार व्यष्टि और समष्टि को प्रभावित करती हैं? यदि हमें साहित्य में समाहित इन विभिन्न शक्तियों की ठीक-ठीक जानकारी हो सके तो इन फलश्रुतियों पर उठती शंकायें स्वतः समाप्त हो जायें.

कोई साहित्यिक ग्रंथ बहुप्रयोजनीय भी हो सकता हैं क्योंकि साहित्य में विज्ञान, ज्योतिश, सैन्य विज्ञान, खगोल षास्त्र आदि को तथा ऐतिहासिक सन्दर्भ में लौकिक चरितों के माध्यम से विभिन्न जीवन दर्षनों को समाज के समक्ष प्रस्तुत करने की अद्भुत क्षमता हैं. पुराण साहित्य बहुप्रयोजनीय हैं. इसमें साहित्य की शक्तियों का यथाउचित प्रयोग करते हुए विभिन्न प्रकार के कारको और तत्वों को सूक्ष्मता से समाहित किया गया हैं. जिनसे उनका अपेक्षित प्रभाव समाज पर होता हैं. पुराण साहित्य के सदृष्य रामचरित मानस में भी बहुप्रयोजनीयता हैं. श्रीरामराज्याभिषेक को हम एक ऐतिहासिक चरित भी मान सकते हैं और श्रीराम को अवतार मानकर लोकोन्तर दिव्य चरित्र भी. यह श्रोता या पाठक के व्यक्तिगत विवेक और मान्यता पर निर्भर है कि वह उसे किस रूप में देखता है। इसके आगे के बिन्दु पर विचार करने से स्पश्ट होता है कि नाट्य, संगीत आदि तत्वों के संयोग से काव्य में वर्णित मानस के रामराज्याभिषेक चरित में योग और भोग दोनों के कारकों को समाहित किया गया हैं. अर्थात उसमें विरति और विवेक उत्पन्न करने वाले तथा सुख सम्पत्ति प्रदान करने वाले दोनों प्रकार के कारकों का समावेश हैं. यह व्यक्ति विशेष की रूचि और अन्तःकरण की स्थिति आदि पर निर्भर है कि सन्दर्भित चरित्र को पढ़ते या सुनते समय उसका ध्यान किन कारकों पर जाता हैं तथा वह उन कारकों को अपने जीवन में कितना आत्मसात करता हैं. शेष पृष्ठ पर....

साहित्य मेला-एक नजर

साहित्य मेला: सम्पन्न

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद एवं राष्ट्रीय हिंदी मासिक विश्व स्नेह समाज' के सयुक्त तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय साहित्य मेला १८ दिसम्बर, रविवार को नागरी प्रचारिणी सभा में द्विसत्रीय देवरिया महोत्सव का आयेजन विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान व राष्ट्रीय हिंदी मासिक 'विश्व स्नेह समाज' के सयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया गया.

साहित्य मेले के पहले दिन अखिल भारतीय पत्र-पत्रिका प्रदर्शनी का उद्घाटन प्रसिद्ध समाज सेवी बी.एल. शर्मा ने किया जिसमें पॉच सौ से अधिक पत्र-पत्रिकाएं व पुस्तकें शामिल की गई. प्रदर्शनी लोगों के द्वारा काफी सराही गयी.

पुस्तक प्रदर्शनी उद्घाटन के बाद 'साहित्यिक पत्रकारिता' के विविध आयाम' विषयक संगोष्ठी का आयोजन झॉसी से पधारे वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. ओमप्रकाश बरसैया की अध्यक्षता में हुई. जिसमें मुख्य अतिथि पूर्व जज दिनेश चन्द्र दूबे रहे. वक्ताओं में कर्मनिष्ठा के संपादक डॉ० मोहन आनंद तिवारी, सुपर इंण्डिया के संपादक डॉ० वृंदावन त्रिपाठी 'रत्नेश', डॉ० शिवेन्द्र त्रिपाठी, श्री निवास चतुर्वदी, मुन्ने बाबू दीक्षित शशांक, डॉ. प्रमोद सक्सेना, हरिचरण वारिज, अंगमाधुरी के संपादक रामगणेश पाण्डेय, समाज सेवी सुशील कुमार पाण्डेय, गोपाल कृष्ण यादव आदि मुख्य रूप से थें. गोष्ठी संचालन डॉ० भगवान प्रसाद उपाध्याय ने किया और अतिथियों का स्वागत कार्यक्रम संयोजक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने किया.

अखिल भारतीय कवि सम्मेलन

कार्यक्रम के द्वितीय सत्र में अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया. कार्यक्रम की सफलता का राज इस बात से लगाया जा सकता है कि सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय माघमेला का पंडाल की सारी कुर्सियां खचाखच भरी हुई थी, पंडाल के बाहर से लोग चारो तरफ घेरे खड़े हो कवि सम्मेलन का आनंद ले रहे थे. सायंकाल ६ बजे शुरू हुआ यह कवि सम्मेलन ठंड के बीच रात १ बजे तक चला. चॉद अपनी चॉदनी को विराम दे रहा था और बिजली के बल्व चॉद की कमी को दूर करने का पूरा प्रयास कर रहे थे. शांत माहौल में श्रोताओं की तालियों की गड़गड़ाहट अनायास ही तम्बुओं के शहर में चिर निद्रा में सोये कल्पवासियों को उठाकर कार्यक्रम स्थल की ओर जाने को मजबूर कर रहे थे. कार्यक्रम में श्रोताओं ने भरपूर आंनद उठाया और जाते समय श्रोताओं की जुबॉन से 'वाह मजा आ गया' शब्द निकल रहे थे. कार्यक्रम का शुभारम्भ एक युवा कवि अशोक कुमार गुप्ता द्वारा सरस्वती वंदना से हुआ.

भिण्ड, मध्य प्रदेश से पधारे रमेश कटारिया 'पारस' ने-

अंध विश्वासों के सहारे पल रहे हैं हम।
अंधे कुंए में अंधे बनकर चल रहे हैं हम।

से कार्यक्रम का समा बांधा तो इलाहाबाद के वरिष्ठ कवि एवं ठेगें पर सब मार दिया के संपादक डॉ० रामसेवक शुक्ल ने-**अब प्यार की कुछ पंक्तियां**

रचकर के देख लें,
सद्भाव की अभिव्यक्तियां,
गढ़कर के देख लें

से कार्यक्रम को आगे बढ़ाया. भोपाल से पधारे कर्मनिष्ठा के सम्पादक एवं सुप्रसिद्ध कवि डॉ० मोहन आनन्द तिवारी ने- **हिंदी माथे की बिन्दी है,**

उर्दू दिल का प्यार।
आओ साथ करें हम,
सब मिल भाषा का श्रृंगार.

से कार्यक्रम को एक नयी ऊँचाई प्रदान की. प्रतापगढ़ से पधारे वरिष्ठ कवि डॉ० वृन्दावन त्रिपाठी 'रत्नेश' ने अपने रचना से आज के नेताओं की हाले बयॉ को व्यक्त किया।

हवा धूप पानी पर कब्जा है इनका,
धन और सत्ता से रिश्ता है इनका।
न रोटी की चिन्ता न मेहनत से मतलब
सियासत ही बस एक धन्धा है इनका।।

सुनकार वाहवाही लूटी.

ग्वालियर से पधारे दिनेश चन्द्र दूबे ने-**तुम्हें बॉधने इक कागज पर,**

आ कोई गीत लिखें,
समय पार, जब उम्र खड़ी हो,
जीवन चित्र दिखें।

काफी सराही गयी। भोपाल से पधारे व्यंगकार एवं गीतकार हरिचरण वारिज ने- **मैं गांधी का चौथा बंदर,**

आंख में शोले हाथ में खन्जर।।

सुनाकर श्रोताओं को गुदगुदाया। रायसेन, मध्य प्रदेश से पधारे कवि बी.पी.कोष्ठी 'सरगम' ने-

आदमी के हाथों से निकल गया आदमी।
चमड़े के सिक्के सा चल गया आदमी।।

से श्रोताओं की खूब ताली बटोरी। नई दिल्ली से पधारी कवियत्री व कार्यक्रम

की मुख्य अतिथि श्रीमती हेमा उनियाल ने- **मजदूर जो दिन भर,**

तोड़ता है पत्थर,
बेचता है पसीना,
खाता है धूल और मिट्टी

सुनाकर एक मजदूर की व्यथा कथा को सुनाकर वाह वाही लुटी।

प्रतापगढ़ से पधारे वरिष्ठ कवि पं० शिवेन्द्र त्रिपाठी ने-

उठो कलम के ऐ रणवीरें,
गूंज रहा तूफान है।
लोकतंत्र की चिता जल रही,
रोता हिन्दुस्तान है।।

से वाहवाही लूटी।

झांसी से पधारे डॉ० ओमप्रकाश बरसैया 'ऊँकार' ने-

जल में रह गजराज को, खींच लेय घड़ियाल,
पर जल बाहर श्वान पै, गले न उसकी दाल।

से वाहवाही लूटी। कार्यक्रम में इलाहाबाद के विनय बागी ने अपनी ओजस्वी कविता- **हमने जिनको सत्ता सौंपी, निकले लाबरदारों में,**
संसद पर कब्जा कर डाला चम्बल के सरदारों ने।

सुनाकर वाहवाही लूटी। पीलीभीत से पधारे मुन्ने बाबू दीक्षित 'शशांक' ने- **आओ हम जीवन के, अभिनव मधु गीत लिखें।और नहीं कुछ तो हम, मन की ही प्रीत लिखें।**

अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में भोपाल से पधारे वरिष्ठ कवि डॉ० प्रमोद प्रकाश सक्सेना ने

सत्य थाम कर जो चला झूठा दिया उछाल
शरणागत उसके हुए दिग दिगन्त दिक्‌पाल।।

से कार्यक्रम को विराम दिया। इसके अलावा इटावा से पधारे महेन्द्र सिंह, बहराइच के ईश्वर शरण शुक्ल, बरेली के श्रीनिवास चतुर्वेदी, चित्रकूट से श्री रामगणेश पाण्डेय, इलाहाबाद के जगदम्बा प्रसाद शुक्ल, कुटेश्वर नाथ त्रिपाठी 'चिरकूट इलाहाबादी', वीरेन्द्र सिंह कुसुमाकर, सूर्यनारायण शूर सहित तमाम कवियों की रचनाएं भी सराही गयी। कवि सम्मेलन में मुख्य अतिथि नई दिल्ली की श्रीमती हेमा उनियाल थीं व अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार डॉ०प्रमोद प्रकाश सक्सेना, भोपाल ने किया. विशिष्ट अतिथि के रूप में वरिष्ठ साहित्यकार डॉ० वृन्दावन त्रिपाठी 'रत्नेश' संपादक, सुपर इण्डिया, प्रतापगढ़ थे. कार्यक्रम के अंत मेंकार्यक्रम संयोजक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने अतिथियो के प्रति आभार प्रकट किया.

मानवाधिकार संरक्षण में मीडिया की भूमिका

कार्यक्रम के दूसरे दिन 'मानवाधिकार संरक्षण में मीडिया की भूमिका' विषयक विचार गोष्ठी का आयोजन भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ के सहयोग से किया गया. इस अवसर पर मुख्यअतिथि नवभारत दैनिक सतना के सम्पादक श्री संजय पयासी थे तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रियंका पाक्षिक लखनऊ के संपादक श्री रामप्रकाश वर्मा कर रहे थे. अपने उद्‌बोधन में मुख्य अतिथि ने कहा- आम आदमी के अधिकार के लिए व्यवस्था परिवर्तन में मीडिया सकारात्मक भूमिका निभा सकता है, इसके लिए उसे पारदर्शी होना बहुत आवश्यक है. इसी पारदर्शिता गुण के कारण ही आजादी की लड़ाई में मीडिया की भूमिका महत्वपूर्ण बनी हैं. आज मानवाधिकारों के हनन रोकने में संविधान की विभिन्न धाराओं में भी परिवर्तन आवश्यक हो गया हैं. मानवाधिकार का लाभ आम आदमी को मिले इसी के साथ ही साथ सूचना के अधिकार पर भी मीडिया जागरूक रहें तभी वह समाजोपयोगी बना रहेगा.'

अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में श्री रामप्रकाश वरमा ने कहा-'हमें मानवाधिकारों की चिन्ता से पहले पत्रकारों के अस्तित्व सम्मान और सुरक्षा की भी चिन्ता करनी पड़ेगी. इसके लिए हमें एक मंच पर एक स्वर में एक ही बात कहनी होगी और अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए सार्थक संघर्ष करना होगा. विशिष्ट वक्ता अन्तर्राष्ट्रीय श्रोता समाचार के श्री अरूण अग्रवाल ने कहा-'मीडिया ही मानावाधिकार की सही सम्यक जानकारी दे सकता हैं किन्तु पत्रकार अपनी ही आवाज नहीं उठा पाते इसीलिए उनकी मौलिक सूविधाएं भी उन्हें नहीं मिल पाती. आज जरूरत हैं कि देश में मीडिया कौंसिल की स्थापना की जाय और उसे अधिकार सम्पन्न बनाया जाए. कर्मनिष्ठा भोपाल के सम्पादक श्री मोहन आनन्द तिवारी ने कहा-'आज सामाजिक मानदण्ड बदल गये हैं इसलिए कानून के दायरे में रहकर मानवाधिकार की बात करना एक चिन्ता का विषय हैं. मीडिया में हताशा को स्थान नहीं मिलना चाहिए. लखनउ से आये यशोदानन्दन के सम्पादक एवं अन्तर्राष्ट्रीय मानवधिकार परिषद के अध्यक्ष कृष्ण गोपाल यादव ने मानवाधिकार आयोग की विस्तृत जानकारी दी. समारोह का संचालन महासंघ के संयोजक डॉ० भगवान प्रसाद उपाध्याय ने किया और स्वागत राष्ट्रीय महामंत्री श्री रामबाबू चौबे तथा आभार प्रातीय संगठन मंत्री गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने किया. इसमें डॉ० अनवार अहमद, रिजवान चंचल, डॉ० रामसेवक शुक्ल आदि की उपस्थिति उल्लेखनीय रहीं.

समापन सत्र: सम्मान समारोह

कार्यक्रम के समापन सत्र में उत्तर प्रदेश सरकार के समाज कल्याण विभाग में विशेष सचिव आई.ए.एस. ओमप्रकाश शुक्ला के मुख्यअतिथ्य में तथा जहाँगीर ममोरियल के निर्देशक डॉ० अनवार अहमद की अध्यक्षता में सम्मान समारोह का आयोजन हुआ. कार्यक्रम में सर्वप्रथम साहित्य श्री सम्मान सुपर इंडिया के संपादक व वरिष्ठ साहित्यकार श्री वृन्दावन त्रिपाठी 'रत्नेश' जी को सम्मानित करने से प्रारम्भ हुआ.

साहित्य के क्षेत्र में: साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए डॉ० प्रमोद प्रकाश सक्सेना, साहित्य गौरव, भोपाल, मप्र. श्रीमती तारा सिंह, महादेवी वर्मा, मुम्बई, श्रीमती हेमा उनियाल, मैथिलीशरण गुप्त सम्मान, नई दिल्ली, मुन्ने बाबू दीक्षित 'शशांक'-जगदीश प्रसाद गुप्त सम्मान, पीलीभीत, डॉ० ओमप्रकाश बरसैयाँ ऊँकार-निराला सम्मान, झाँसी, ज़ेबा रशीद 'ज़ैबुन्निसॉ'-मुंशी प्रेमचन्द्र सम्मान, जोधपुर, राजस्थान,श्रीमती नीलम खरे-लक्ष्मीकांत वर्मा सम्मान, मंडला, म०प्र०, शिवेन्द्र त्रिपाठी-साहित्य गौरव, प्रतापगढ़, श्रीमती सुलभा माकोड़े-डॉ० रामकुमार वर्मा सम्मान,भोपाल, म.प्र, रमेश कटारिया'पारस' -रामवृक्ष वेनीपुरी सम्मान, भिण्ड, म.प्र., डॉ० ओमप्रकाश हयारण 'दर्द'-सुभद्रा कुमारी चौहान सम्मान,झॉसी, उ.प्र., दिनेश चन्द्र दुबे-उपेन्द्र नाथ अश्क सम्मान,ग्वालियर, म.प्र., हरिचरण 'वारिज', निराला सम्मान,भोपाल, म.प्र., बी.पी.कोष्ठी 'सरगम'-शकुन्तला सिरोठिया सम्मान,रायसेन, म.प्र., डॉ० मोहन तिवारी आनन्द-मैथिलीशरण गुप्त सम्मान,भोपाल,म.प्र, डॉ० दिवाकर 'दिनेश' गौड-साहित्य गौरव, गोधरा, गुजरात,पं० मुकेश चतुर्वेदी 'समीर'-मुशी प्रेमचन्द्र सम्मान, सागर, म०प्र०,डॉ० एन०एस०शर्मा-साहित्य गौरव, मुम्बई सूर्यदेव पाठक पराग-साहित्य गौरव सम्मान,गोरखपुर, रमेश यादव-साहित्य गौरव सम्मान, इन्दौर, म.प्र., डॉ० शिव चौहान 'शिव',मोती बी.ए.,रतलाम, म.प्र. प्रो.(डॉ०) शरद नारायण खरे-स्व०ओकार नाथ दूबे शिक्षक सम्मान,मंडला, म०प्र०,.श्री संजय कुमार चतुर्वेदी 'प्रदीप'-युवा प्रतिभा सम्मान,लखीमपुर खीरी, उ०प्र०, ईश्वर शरण शुक्ल-युवा प्रतिभा सम्मान, इलाहाबाद, अभय कुमार ओझा- प्रशस्ति पत्र, खगड़िया, बिहार,श्री महेन्द्र श्रीवास्तव 'अधिवक्ता'-प्रशस्ती पत्र, दमोह, मध्य प्रदेश, अशोक कुमार गुप्ता, इलाहाबाद

समाज के क्षेत्र में-समाज सेवा में क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए **श्री सुशील कुमार पाण्डेय-साहित्य श्री**,नई दिल्ली, बी.एल.शर्मा-समाज गौरव, इलाहाबाद, किशन कुमार सिंह-समाज गौरव-बिहार को सम्मानित किया गया.

पत्रकारिता के क्षेत्र में:पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए-नवभारत हिन्दी दैनिक सतना के संपादक श्री संजय पयासी, प्रियंका पाक्षिक लखनऊ के सपांदक श्री रामप्रकाश वरमा, अन्तर्राष्ट्रीय श्रोता समाचार के संपादक श्री अरूण अग्रवाल, धन्वन्तरि, जौनपुर के संपादक पं. वी.डी.मिश्र, अद्वैत तिवारी, आर. के.यादव, रिजवान चंचल, राहुल दुबे सम्मानित किया गया.

कार्यक्रम के अंत में मुख्य अतिथि ने अपने उद्बोधन में कहा कि इस तरह के आयोजनों से साहित्यकारों, पत्रकारों व समाजसेवियों का मनोबल बढ़ता हैं. ऐसे आयोजन के सूत्रधार श्री गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी बधायी के पात्र हैं. इनका यथासम्भव सहयोग कर मनोबल बढ़ाना चाहिए.

अपने अध्यक्षीय भाषण में डॉ. अनवार अहमद ने कहा कि श्री द्विवेदी विगत कई वर्षो से इस तरह के आयोजन करते आ रहे हैं. मैं इनका यथासम्भव सहयोग करता रहता हूं.

साहित्य मेला पर विचार

० कार्यक्रम सराहनीय रहाः **कृष्ण कुमार गिरि**, इलाहाबाद

० कार्यक्रम अपने ढंग से सराहनीय रहाः **जवाहरलाल तिवारी**, इलाहाबाद

० कार्यक्रम ओजस्वी, सार्थक एवं सराहनीय रहाः **श्रीमती हेमा उनियाल**, नई दिल्ली

० कार्यक्रम विशेष सराहनीय रहाः **आर. पी.उनियाल**, नई दिल्ली

० कार्यक्रम अविस्मरणीय रहाः **रमेश कटारिया**, ग्वालियर,

० कार्यक्रम के संयोजक की सामर्थ्य सीमा के अनुसार सही रहा यह कार्यक्रमः **श्रीनिवास चतुर्वेदी**, बरेली,

० आयोजकों का श्रम सार्थक लगाः **सूर्यदेव पाठक'पराग'**, गोरखपुर

० कार्यक्रम बहुत ही सुन्दर रहाः **आर०के. यादव**, बहराइच

० इस कार्यक्रम में जो कुछ भी देखने, सुनने को मिला वैसा कभी नहीं देखाः**पंचम सिंह**, इलाहाबाद

० कार्यक्रम प्रशंसनीय रहा. अनवरत ऐसा कार्यक्रम होना चाहिएः **बी.आर.विमल**, लखनउ

० पत्रकारिता समाज को दिशा निर्देश देती हैंः **दीपक दीवाना**, इलाहाबाद

० आयोजन की आर्थिक विषमता से जूझते हुए जिस लगन और कर्मठता से आप साहित्य की सेवा कर रहे हैं वह सराहनीय है. कुछ व्यवधान रहें और रहते हैं किन्तु आप अपनी सामर्थ्य में सफलता प्राप्त करते रहेगें: **डॉ० प्रमोद सक्सेना**, भोपाल

० आपके द्वारा आयोजित साहित्य मेला को देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई. हम ऐसे

सफल आयोजन के लिए आयोजकों के आभारी हैः **राजेश कुमार सिंह**, इलाहाबाद

०आपके द्वारा आयोजित साहित्य मेला में आकर अति प्रसन्नता एवं गौरवन्वित महसूस कर रहा हूँ. आप सभी के द्वारा किए गए उद्‌बोधन अभिभाषण एवं मार्गदर्शन का आभार व्यक्त करते हुए विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान के विस्तार, मजबूत संगठन एवं उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ. नवयुवकों में पत्रकारिता के प्रति आपके द्वारा अपने शब्दों के माध्यम से प्रदान की गई ऊर्जा हम सभी के लिए आपका आर्शीवाद हैं आप सभी का कोटि वंदनः **सत्येदव राजपूत** एडवोकेट, रायबरेली,

० आपके द्वारा आयजित साहित्य मेला को देखकर काफी प्रसन्नता हुई. मुझे आपके द्वारा निरन्तर किसी न किसी रूप में पत्रकारों व साहित्यकारों की गोष्ठी विगत कई वर्षो से देखकर प्रसन्नता हो रही हैं. इससे नयी युवा पीढ़ी के पत्रकारों को काफी ऊर्जा प्रदान होती हैं. **रवीन्द्रकान्त पाण्डेय**, संवाददाता, जनसत्ता, कौशाम्बी

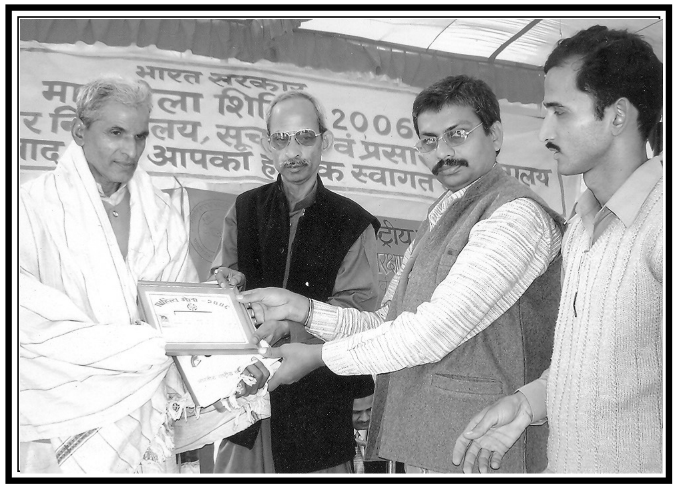

वरिष्ठ साहित्यकार श्री वृन्दावन त्रिपाठी 'रत्नेश' को सम्मानित करते नवभारत के संपादक श्री संजय पयासी, प्रियका कं संपादक श्री रामप्रसाद वरमा एवं गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

वरिष्ठ पत्रकार, पर्यावरणविद्‌ एवं संपादक श्री अरूण कुमार अग्रवाल को करते नवभारत दैनिक के संपादक श्री संजय पयासी

कर्मनिष्ठा के संपादक डॉ० मोहन आन्नद तिवारी को सम्मानित करते एवं कार्यक्रम संयोजक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

जीवी गण

स्नेह कहॉनी

वसीयत

डॉ राज बुद्धिराजा

"दादी-मॉ, वसीयत क्या होती है?"

"चल हट! कैसी-कैसी बातें पूछने लगा है, रे." मीठी डपट लगाते हुए पारो ने कहा.

"मैं क्या? सभी वसीयत की बात करते हैं."

यह बच्चा भी बड़ी-बड़ी बातें करने लगा हैं-पारों ने मन-ही-मन कहा.

"सभी कौन?"

"मम्मी, पापा, चाचा, चाची, ताया, ताई."

"किसकी वसीयत की बात करता हैं तू?" पारों ने बच्चे की पीठ थपथपाते हुए तह तक जाने की कोशिश की.

"आपकी और किसकी" सभी यही कहते हैं, अब तो दादी मॉ को वसीयत कर लेनी चाहिए. वे रिटायर हो गयी हैं न."

"चल हट, पगला कहीं का."

खेल-खेल में बच्चा जैसे आया था वैसे ही चला गया. तो सब लोग यही खिचड़ी पकाते रहते हैं. पारों कुछ गहरे डूब गयी. अभी उसकी रिटायरमेंट को कुछ ही महीने हुए थे. उसने अपनी हर रोटी अपने ही पसीने से खरीदी थी. इसलिए, पैसे-रोटी और पसीने की अहमियत से वह बखूबी वाकिफ थी. उसे अब यह भी याद है कि शादी के बाद उसे चौदह वर्ष लग गये थें, अपना रास्ता खोजने में. पहली बार जब उसे तनख्वाह मिली, तो वह खुशी से फूली नहीं समायी थी. दो-दो रूपयें अपने बच्चों को दिये और दो रूपये का प्रसाद मंदिर में चढ़ाया. स्वभाव से मितव्ययी होने के कारण आधे से ज्यादा तनख्वाह बच गयी थी. उसे अब भी याद हैं कि अपने घर आने वाले हर अतिथि की वह आवभगत करती और सौ रूपया देकर विदा करती. वसीयत की बात उसके लिए नई नहीं थी. बार-बार उसके सामने कहा जाता था. भले ही, वह दबी जबान में क्यों न हो?

"मॉ, तुम्हें प्रॉविडेंट फंड का पूरा पैसा मिल गया न."

"पेंशन का भी हो गया न."

"सब कुछ करा लेना चाहिए. सरकारी काम तो वैसे ही होते हैं."

"मॉ बहुत होशियार हैं. सब कुछ पहले से ही करा लिया होगा."

पारों इन सबको जली निगाहों से देखती और मोटर में बैठकर चली जाती. सच तो ये हैं कि उसके पैसे पर घर के सभी लोगों की नजर थी. पारो यह जानती थी कि आगे आने वाली सात पीढ़ियां न तो इतना पैसा कमा सकती हैं और न इतनी प्रतिष्ठा. लूले-लगड़े हैं, ये सब. खुद कुछ कर नहीं सकते और दूसरे की दौलत पर गिद्ध नजर रखते हैं. खून के इन रिश्तों से पारों को सख्त नफरत हो गयी थी. वसीयत न हुई अलादीन का चिराग हो गयी. हिम्मत है तो बचाओं न. 'खुल जा सिमसिम', कहने से काम थोड़ी चलेगा. पारो बीच-बीच में डांट-फटकार लगाती रहती. पता नहीं क्यों इन लोगों में असुरक्षा की भावना घर करती जा रही है. इन्हें डर है कि मां अपना खूबसूरत घर किसी संग्रहालय में न बदल दें. अपना पैसा अपने प्रिय शिष्यों को न दें दें. जब इन्होंने देखा कि उनका असर पारों पर रत्ती भर नही हैं, तो उन्होंने उनके मित्रों से कहलवाना शुरू किया. "पारो, तुम अपनी वसीयत क्यों नहीं कर देती? जिंदगी का क्या भरोसा? पता नहीं, प्राण-पखेरू कब उड़ जाए?" एक मित्र ने कहा.

"तुम अपना रास्ता नापो. मुझे तो अपनी जिदंगी पर पूरा भरोसा हैं, क्योंकि मैंने अपनी जिंदगी को मांजा-चमकाया और सजाया-संवारा हैं. भरोसा नहीं हैं, तो इन गिद्धों का. ये तो मुझें नोंच-नोंचकर खा लेंगे. ना जाने कितनी बार इन्होंने मुझसे लाखों रूपये ऐंठे हैं. यह कहकर कि हम जल्दी लौटा देंगें. पर वह दिन आज तक नहीं आया. और, हां! जहां तक प्राण-पखेरू के उड़ने का प्रश्न हैं, वह इस दस द्वारे पिजंरे को छोड़कर कभी नहीं उड़ेगा. उसका भी सुंदर तन और मन से लगाव हो गया हैं. जहाज पर बैठे पंछी की तरह ये मेरा आत्मा यहीं बसा रहेगा, हमेशा के लिए." उस मित्र को ये पता नहीं था कि पारों दर्शन के महज संसार में डूबी रहती हैं. बड़े-बड़े साधु संतो को उसने डिगते हुए देखा था. पारो हैं कि चट्टान की तरह उसके सामने खड़ी हैं. सिर्फ उसने गेरूआ नहीं पहना था. बात यहीं तक रहती, तो बात भी थी. पारों की अस्वस्थता पर किसी के ५०० रुपये खर्च हो गये, तो घर में तूफान आ गया.

"मैंने तुमसे कहा था न मॉ कि तुम अपनी बीमारी का बीमा करवा लों. पर तुम हों कि सुनती नहीं हों." एक आवाज आयी.

"पता हैं इलाज कितना मंहगा हो गया हैं. लाखों रूपये खर्च हो जाते हैं"

पारों ने आव देखा न ताव, उसने अपने पर्स में से एक पांच सौ का और

एक बीस का नोट निकाला और उनकी ओर बढ़ाते हुए कहा, "ये लो पांच सौ रूपये और ये लो बीस रूपये, उसका सूद. तुम लोगों को याद है कि तुम जन्म के बाद लुंज-पुंज की तरह बिस्तर पर पड़े रहते थें. कितनी-कितनी बार मैंने अपने पेट पर पट्टी बांधकर तुम लोगो की सेवा की. खबरदार. यदि तुम लोगों ने मेरी बीमारी के बीमे की बात की." और पारों मोटर में बैठकर चली गयी थी. उसके मन में क्या तूफान उठा रहा था, कोई नहीं जानता. वैसे उसने जिंदगी में बहुत बड़े-बड़े फैसले अकेले ही लिये थें. इस बार भी फैसला लेते समय उसने लौह पुरूष का रूप धारण कर लिया था.

एक दिन सुबह-सुबह तीन चार मोटरों में कुछ लोग आये और पारों उन्हें घर की एक-एक वस्तु बताने लगी. विदेशी मित्रों से मिले अमूल्य उपहार, पुस्तकें, धरोहरी चित्र सब कुछ उसमें शामिल था. वह एक अधिकारी को कुछ समझाने में लगी थी, "ये संग्रहालय एक महीने में तैयार हो जाना चाहिए, मैं महीने भर बाद लौटूंगी."

"कहां जा रही हो, मॉ,"सबने एक साथ पूछा।

"मैं कहीं नहीं जा रही. जा तो तुम लोग रहे हो. तुम लोगों के लिए मैंने एक मकान किराये पर देख लिया हैं. " और पारो ने टेंपो में बैठे ड्राइवर को और दो आदमियों को भीतर बुलाकर कहा-"ये सारा समान नये वाले घर में पहुंचा दो."

पारो ने अपने पोते को बुलाकर कहा, "बेटे, वसीयत ये होती हैं." और वह मोटर में बैठकर चली गयी थी.

(लेखिका विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान की संरक्षिका एवं भारतीय जापान सांस्कृतिक परिषद, की अध्यक्षा है)

डॉ. वर्षा पुनवटकर सम्मानित

राजश्री स्मृति न्यास साहित्यिक संस्था, कलकत्ता के तत्वावधान में सम्मान श्रृखंला-५४ के अन्तर्गत को पश्चिम बंग बाङला अकादमी के जीवनानन्द सभागार में कवयित्री डॉ. वर्षा पुनवटकर 'बरखा', वर्धा महाराष्ट्र का सम्मान अलंकरण अनुष्ठित हुआ. अतिथियों के मंचस्थ होने के पश्चात उत्सवमूर्ति डॉ. वर्षा पुनवटकर द्वारा राजश्री के चित्र पर पुष्पांजलि से प्रारम्भ हुआ. कार्यक्रम में प्रो. डा. वसुधर मिश्र, कविवर राधेश्याम पोद्धार एवं अशोक सिंह अकेला मंच पर विराजमान थे. साहित्यकार श्यामलाल उपाध्याय ने उत्सव मूर्ति डॉ. वर्षा पुनवटकर के संक्षिप्त वृत का आलेख पढ़ा. श्रीमती कुसुम पारीक ने अंगवस्त्र, श्री लक्ष्मी जायसवाल ने श्रीफल, रोहित जायसवाल ने लेखनी, कविवर सत्य नारायण सिंह 'आलोक' ने स्मृति चिन्ह श्री विजय प्रसाद ने 'समृद्धिका सदुपयोग ग्रंथ द्वारा उत्सव मूर्ति डॉ. वर्षा पुनवटकर का सारस्वत सम्मान अनुष्ठित किया. सम्मान ग्रहण करने के पश्चात डॉ० वर्षा ने उमड़े जन प्रवाह के सम्मान से आत्म विभोर होकर अपनी प्रसन्नता की अनुभूति को कविजन-श्रोतागण के प्रति साभार धन्यवाद ज्ञापन के रूप में प्रस्तुत किया.

प्रा. सोनवणे राजेंद्र को स्व. भंवरी बाई गोधा स्मृति साहित्य पुरस्कार

बीड़, महराष्ट्र. से प्रकाशित हिंदी मासिक 'लोकयज्ञ' के संपादक प्रो. सोनवणे राजेद्र 'अक्षत' को हाल ही में राजस्थान साहित्य अकादमी शाखा कोटा की ओर से पुरस्कृत किया गया.

कोटा, राजस्थान में अखिल भारतीय साहित्य परिषद का आयोजन किया गया था. सम्मेलन के समापन सत्र में प्रो. सोनवणें राजेन्द्र अक्षत को राष्ट्रभाषा हिंदी की सेवा एवं विकास तथा उत्कृष्ट साहित्य सृजन हेतु ११०१ रुपये का स्व० श्रीमती भंवरी बाई गोधा स्मृति साहित्य पुरस्कार, स्मृतिचिन्ह, सम्मान पत्र के साथ राजस्थान साहित्य अकादमी के महामंत्री डॉ० कृष्णाचद्र व वरिष्ठ साहित्यकार गजेन्द्र सिंह सोलकी के हाथों प्रदान किया गया.

पृष्ठ १६ का शेष भाग....

मानस की बहुप्रयोजनियता

तदनुसार ही उसे विरति, विवेक अथवा सुख-सम्पत्ति की प्राप्ति होगी. योग और भोग दोनों प्रकार के कारकों को एक स्थान पर संयोजित करने में मानसकार की यह सोच रही हैं कि सुख सम्पत्ति प्राप्त करने की आकांक्षायुक्त व्यक्ति का कदाचित ध्यान विरति और विवेक के कारकों पर जाकर उसके जीवन की दिशा बदल सकता हैं. यदि इसमें केवल योग के पक्ष को ही समाहित किया जायेगा तो भोग की प्रवृत्तियुक्त व्यक्ति उसे पढ़ेगा ही नहीं. सन्दर्भित फलश्रुति मिथ्या नहीं हैं बल्कि यही मानस की बहुप्रयोजनीयता हैं. साहित्य की व्यापकता और उपादेयता उसकी बहुप्रयोजनीयता पर निर्भर हैं. जनता महाविद्यालय, अजीतमल, औरैया, उ.प्र०

Hkk"kkvksadsek/;e ls fdlh Hkh lekt ds jk"Vª dk pfj=eq[kj gksrk gSa- Hkkjrcgqjk"kh ns'k gS ysfdu Hkk"kkvksa dh vikj fofo/krk ds ckotwn Hkkjrh;rk dk lw= ge Hkkjrokfl;ksa ds n`;ksa dks tksM+rk vk;k gSa- jk"Vªh; ,drk dks lqn`<+ djus ds fy, vkfn 'kadjkpk;Z th us pkj ifo= /kke dh ladYiuk dh vkSj O;oLFkk dh- vius ns'k ds pkj vyx&vyx dksuksa ij fLFkr ^pkj/kke* dh ;k=kvksa dks gh yhft, rks ;g ns'k dh ,drk dk cgqr cM+k lk/ku fl) gksrh gSa- mRrj] nf{k.k] iwoZ vkSj if'pe lHkh txg ds yksx tc pkjksa /kke tkrs gSa] rks mudk ,d nwljs ls feyu gksrk gS] izse Hkko c<+rk gSa] vkSj jk"Vªh; ,drk dks c<+kok feyrk gSa] lc gh lEidZ Hkk"kk fgUnh gh Fkh- blizdkj fgUnh laLd`fr ,drk ds tfj, jk"Vªh; ,drk dh etcwr dM+h fl) gksrh gSa- fgUnh ,d ,slh Hkk"kk gS tks cM+h vklkuh ls i<h] cksyh vkSj le>h tk ldrh gSa- egkRek xkW/kh] fouksck Hkkos] Hkwriwo Z iz/kkuea=h Jherh bafnjk xkW/kh vkSj jktho xkW/kh dk ekuuk Fkk fd fgUnh gh jk"Vªh; ,drk dh dM+h gSa- fgUnh ns'k dks tksM+us dk yhu egRoiw.kZ Hkk"kk gSa- fgUnh jk"Vªh; ,drk dk ek/;e gSa- fgeky; ls fudyh gqbZ fgUnh :ih xaxk esa lEiw.kZ Hkkjrh; Hkk"kkvksa dk ty lekfgr gSa vkSj mlh ty dk vfHk"ksd djds ge lHkh Hkkjrh; tuekul dks jk"Vªh;rk] v[kaMrk] ,drk vkSj lo/keZ leHkko ds vkxeu ls ifo= djus dk thounk;h dk;Z dj jgs gSa- ^,d g`n; dks Hkkjr tuuh*] ^,d olq/kSo dqVqEcde* dh Hkk"kk dks izse ls yksx viuk,W] blds fy, iz;Ru djuk gSa- gekjk ns'k Hkkjr fofHkUu D;kfj;ksa ls

हिन्दी राष्ट्रीय एकता और अखंडता की कड़ी

✍,l-ch-egjcbVs

,d lt xgq vk lqUnj m|ku gS] blesa rjg&rjg dh D;kfj;kW gSa] blds ckotwn mldk viuk ,d jax gSa- Bhd mlh rjg vkdk'k esa lkr jaxksa ds lqUnj leUo; dk ,d uke banz/kuq"k gSa- blh rjg gekjk Hkkjr gSa- fgUnh dks dsoy cksy&pky ds Lrj ij gh laidZ Hkk"kk ugha cukuk gSa cfYd mlls lkfgR;] dyk vkSj laLd`fr ds Lrj ij Hkh laidZ Hkk"kk dh Hkwfedk fuHkkuh gSa- blds fy, vko';d gSa fd Hkkjr dh vU; Hkk"kkvksa ds JS"B lkfgR; dks fgUnh esa vuqokn gksa- rkfd ;fn dksbZ Hkh O;fDr vU; Hkk"kkvksa dk lkfgR; tkuuk pkgs rks og mls fgUnh ds ek/;e ls izkIr gks tk,- gekjk lkfgR; ,d gS rks yksxksa esa Hkkouk Red ,drk LFkkfir gksxh] tks fdlh Hkh jk"Vª esa vko';d ugha] cfYd vfuok;Z gSa- ge jk"Vªh;rk ds v[kaM lw= esa ca/k tkrs gSa rsyxw dfo ^"kadjS;k^ dgrs gSa% ßeSa vuojr #i ls vius ns'k dh Hkwfe ls tqM+k gqvk gwW+ eSa us tUe fy;k gSa vkSj eSa blekr`Hkwfe dk _.k pqdkus dks rRij gwWa vkSj mlh ekr`Hkwfe ds fy, iwjs Hkkjr us ,d lkFk feydj vktknh dh yM+kbZ yM+h Fkh-Þ xaxks=h ls ysdj nf{k.k xaxks=h rd fgUnh dh t;;k=k jk"Vªh; ,drk esa fgUnh ds egRoiw.kZ ;ksxnku dks js[kkafdr djrh gSa- fgUnh ge lc dh J)k Lusg dh gohkj gSa- bls viuk dj ge Hkkjr dh izxfr esa jk"Vªh; ,drk ds egRoiw.kZ ;Ke esa viuk ;ksxnku vo';n sa- lpo gS fgUnh jk"Vªh; ,drk vkSj v[kaMrk dh dM+h gSa- fgUnh dks c<+kuk ge lc dk ije drZO; gSa-

&vkuan uxj] lsd.M ØkWl] dM+xkWo&5] dkZVd

पत्रिका के लिए नियम

१. पत्रिका के १५ तारिख तक न मिलने पर हमें लिखें.

२. पत्रिका की सहयोग राशि संपादक, विश्व स्नेह समाज, एल.आई.जी. -६३, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा इलाहाबाद, उ.प्र. के पते पर विश्व स्नेह समाज के नाम से बनाए गये धनादेश नाम से बनवाए गये बैंक ड्राफ्ट द्वारा भेजें. चेक स्वीकार्य नहीं होगा. सदस्यों को चाहिए कि अपना डाक पता स्पष्ट सुन्दर अक्षरों में लिखें.

३. पत्रिका के लिए लेख तथा प्रकाशन सामग्री कागज के एक ही ओर बायी तरफ पर्याप्त हाशिया छोड़कर स्पष्ट सुन्दर अक्षरों में लिखकर अथवा टाईप कराकर दो पंक्तियों के बीच में समुचित स्थान के साथ भेज़ें. फोटो अथवा कार्बन कापी स्वीकार्य नहीं हैं. प्रकाशन सामग्री पत्रिका के अनुकूल होनी चाहिए. किसी भी उद्धरण का पूरा सन्दर्भ अवश्य दें.

४. किसी पर्व अथवा अवसर विशेष सामग्री हमें अवसर से डेढ़ दो माह पूर्व भेजें.

५. रचना के साथ पर्याप्त डाक टिकट लगा लिफाफा संलग्न अवश्य करें, अन्यथा अस्वीकृति की दशा में रचना वापस करना सम्भव नहीं होगा.

६. पत्र व्यवहार करते समय अथवा धनादेश भेजते समय अपनी सदस्य संख्या अथवा पत्रांक संख्या का उल्लेख अवश्य करें. जो पते के ऊपर लिखी होती हैं यह पता प्रत्येक अंक के पीछे चिपका होता हैं.

O;fDrRo

cgqeq[kh izfrHkk dh /kuh Jherh gseyrk mik/;k;

uke% Jherh gseyrk mik/;k;
tUe frfFk% 16 vDVwcj 1943] gjnk
ifr% Jh yfyr ukjk;.k mik/;k;
ekrk&firk% Jherh lq[knsoh ,oa Lo- ds-ih- ikjs
MkW- Jhgf/kadjjoqlhmykyikjs^Uk;k;k/kh'k½
izHkko izsj.kk% MkW- Jh; qr- Jh/kj ikjs
^jk"V^ ifr iqjLdkj izkIr^] miiqfyl
v/kh{kd] izks- MkW- Jherh :idey
lkjs
'kS{kf.kd ;ksX;rk% ,e-,- ¼laLd`r½
izFke Js.kh esa izFke] xksYMesMy
izkIr] dh-,M- dks fon~
laizfr% iz/kkuk/;kfidk] egkjkuh y{eh
dkbZ dU;k m-ek- 'kkyk
f'k{kk% o/kkZ] gjnk] lkxj fo'ofo|ky;
fo'ks"k% vius izkjafHkd f'k{kk dky ls
fo'ofo|ky; rd lc= izFke Js.kh esa
izFke LFkku izkIr djrh;] ofjfu"B rFkk
e/; izns'k 'kklu f'k{kk foHkkx ,oa
vU; laLFkkvksa ls Nk=o`fRr;ka izkIr-
lkxj fo'ofo|ky; esa fu;fer Nk=k
ds :i esa vkVZ~l Qsdfy-Vh+ dk
izfrfuf/kRo- lSfud f'k{kk] xkbZM-1]
laxhr] u`R; ukfVdk ,a] dBiqryh ,oa
lkaLd`frd fo"k;ksa esa cpiu ls
mYys[kuh; Hkkxhnkfjrk iqjLdkj ,oa
lEeku
ys[ku% f'k{kk] euksfoKku fuca/k] efgyk
mi;ksxh lkfgR;] Hkkjrh; bfrgkl]
laLd`fr] laLd`r ,oa laLd`fr laca/kh
fo"k;ksa esa xgh :fp-
izdk'ku% ubZ nqfu;k] lkIrkfgd
fgUnqLrku] uoHkkjr VkbEl] euksjek]
fgUnw fo'o] ukjh txr tSls mRd"B
xzaFkksa esa jpuk,a izdkf'kr- vfHkuanu
xzaFkksa esa jpuk- xzaFk f'k{kdks<+ rsp j.k*
,oa tho&tUrq vksa dh vk'p;Ztud
dFkk,a] o"kZ 1990] fuekM+ h yksd ehr ok
ladyu] O;k[;k rFkk /dU;kRd ds
lkFk rks d`fr;ka 'kh?kz izdkf'kr- vusd
ukV~; izdk';-
vU; ekSfyd ys[ku&,M-1 ,oa HkkbZ
dh ;kn] ljl yksd dhr
izlkj.k% ys[k] vkys[k] lk{kkRdkj]
vkdk'kok.kh Hkksiky] bankSj] [k.Mok
Vh-oh-ok;Z Øe & okrkZ,a] lk{kkRdkj]
xoyQke fuekM+ ok;Z Øe & nwjn'kZu
Hkksiky ,oa bankSj &
funsZf'kr ok;Z Øe% yoodq[k] HkDr
izgykn] HkDr /kzqo] laiw.kZ jkek;.k
jkT; ,oa jk"V^ Lrjh; u`R; ukfVdk ,a
dSlsV% i;yh isaflatj lhvkoksa th]
02 esa fjyht
izeq[k lEeku& tslh l ,.M tkWbZ.V
xzqi vkWQ ekyok] [k.Mok] vkdk'kok.kh
bankSj] vf[ky Hkkjrh; ukeZnh; efgyk
lHkk] Hkksiky] ueZnk Hkou V^LV& ueZnh;
xkSjo lEeku] ukeZnh; lHkk eqEcbZ
rFkk dM+ kSnk }kjk lEekfur
laLFkk fidk lnL;k% fuekM+ yksd dyk
laxhr] lkfgR; ,oa laLd`fr dyk eaMy]
[k.Mok LFkkiuk o"kZ 1968] izHkkjh
v/;{kk ,oa lfØ; lnL;k ukeZnh;
efgyk e.My] [k.Mok] laLFkk fidk
lnL;k o lgl fpo Hkkjrh; cky o
;qok dY;k.k laLFkk uU;kl [k.Mok]
fuekM+ yksd laLd`fr U;kl [k.Mok]
lfØ; lnL;k xk;=h ifjokj &gfj}kj-

?keaM

`l-,dewax dks yxk fd esSa cgqr cM+k
gks x;k gw¡- cgQwys ugha lek jgk
Fkk] ijarq tc cg ?kweaM rksa mls irk
pyk fd lHkh eawx mlds leku gh
cM+s Fks- cgeu ugh eu dks yn Fkk&^eWak
lseWak] cM+k ugha gks rk^ mlfnu ls
mldk ?keaM tkrk jgk-
2- xqykc dks Nwus ka rks igys dkWVs a
lkeus vkrs gSa- 'kgn dks ikus ds
fy, igys e/kqefD[k;ksa ls fuiVuk
iM+rk gSa- igys dfBukbZ;kW mBkyksa-
vkxs rks vkid h thou esa ^^'kgn gh
'kgn^ feysxk-
3-,d ckj Qwyksa dks vius :i&lkSan;Z
ij ?keaM gks x;k- mUgksaus usa dkWVksa ls
dgk& ^ge nwj jgks tks vksa- rqEgkjs dkj.k
gekjk :idey Hkn~nk gks mBrk gS-
dk;Vsa Qwyksa ls nwj pys x,A
m/kj eud`";ksa us Qwyksa dks uksapMkyk-
much ,d&,d ia[kqMh u'V dj Mkyh-
Qwy cgqr iNrk ,- mudk lewy
uk'k utnhd Fkk- mUgksaus dk;Vksa ls
iqu% vius LFkku ys us dk fuosnu
fd;k- vc Qwyksa a ds o"V de gks
x,-
mUgksaus vius thou esa dksbZ dfBukbZ
dHkh Hkh eglwl ugha dh] D;ksafd
dfBukbZ;ksa a dk lkeuk djds gh os
vkxs tks c<+s Fks-

yfyr ukjk;.k mik/;k;

bZ'kd`ik lnu] 96] vkuan uxj] [k.Mok]
450001

Qk¡;

xeyysyks

xeysyks
dh vkokt yxkrs
xeys dks ysus
}kj ij [kM+h
efgyk ls dgk
cgu] xe ys ysk
lqu dj efgyk
dksyiM+h
D;kyw\
igys gh cgqr
xe gSa
ftanxh esaA

fjrsUnz vxzoky]

11@500] ekyoh; uxj] t;iqj&302017

i;ZVu

श्री अमर नाथ जी

vf[kys'k dqekj feJ

भूखे को अन्न, प्यासे को पानी।
यही है बाबा, बर्फानी की कहानी।।

श्री अमरनाथ बाबा का परम पावन धाम कश्मीर में हिमालय पर्वत पर समुद्र तट से १२७२६ फीट की ऊँचाई पर, पर्वतों के मध्य- ६० फीट लम्बी ३० फीट चौड़ी तथा १५ फीट ऊँची प्रकृति निर्मित गुफा है.

इसी गुफा में हिम (बर्फ) द्वारा निर्मित प्राकृतिक पीढ पर हिम निर्मित शिवलिंग है. परम आश्चर्य यह है कि बाबा का चबूतरा तथा शिवलिंग पक्की बर्फ का हैं जबकि दूर-२ तक गुफा के बाहर सर्वज्ञ ही कच्ची बर्फ मिलती हैं. यह धाम ५१ शक्ति पीठों में से एक है और वहॉ पर आक्सीजन कम होने तथा सूर्य की किरणें न पहुँच पाने की वजह से जीव जन्तु, पेड़-पौधें, घास-फूस इत्यादि नहीं है फिर भी जब श्रावण की पुर्णिमा के एक माह पूर्व से दर्षन गुफा में भक्तों की भीड़ आकर एक जोड़े कबूतर-कबूतरी का दर्शन करती हैं तो भगवान भूत-भावन भोलेशंकर की वाणी से निकली, मॉ पार्वती को सुनाने हेतू अमरकथा का स्मरण अपने आप होने लगता हैं. यह यात्रा श्रावणी पूर्णिमा को बंद हो जाती हैं. पूरे वर्ष में एक माह तक करोड़ो हिन्दू भाई इस दुर्गम यात्रा को पूर्णकर, दर्शन का लाभ लेते हैं.

कहा जाता है कि जब माता पार्वती ने भगवान शिवजी से यह हठ किया कि अब बार-२ मरने और जीने के इस बंधन से मुक्त होकर सिर्फ आपके साथ ही रहना चाहती हूँ तो भगवान शिवजी ने उनसे कहा कि ऐसा नहीं हो सकता. फिर भी भोलेनाथ को उनके हठ के आगे झूकना पड़ा और अमरकथा सुनाने का वायदा किया. लेकिन भोले नाथ यह चाहते थे कि यह कथा इन्हें एकान्त में सुनाऊँगा. यही सोचकर भोलेनाथ पार्वती जी को लेकर पृथ्वी लोक के हिमालय पर्वत पर जहॉ कि जीवधारी नहीं हैं पर आये थें. अमरकथा सुनने वाले प्राणी को यह वरदान था कि वह अमरत्व को प्राप्त होगा. भगवान षिव व माता पार्वती अपनी दृष्टि चारों तरफ दौड़ाई लेकिन उन्हें वहॉ कोई जीवधारी नजर नहीं आया. लेकिन ब्रहमा के लेखनी के अनुसार वहॉ पर पहले से ही किसी तोते का एक अण्डा पड़ा था. जिस पर भगवान शिव अपनी बाघम्बरी बिछाकर बैठना चाहते थें. अण्डा उसी के किनारे दब गया और बाघम्बरी के स्पर्श मात्र से अण्डे से एक तोते का जन्म हुआ, जब कथा आरम्भ हुई तो वह कथा कई दिनों तक चलती रही, माता पार्वती कथा सुनकर हुँकार लगा रही थी लेकिन बिधनानुसार उन्हें नींद आ गयी और उस समय हुँकारा कौन भरे यही सोचकर उस तोते ने पार्वती जी की ही तरह हुँकारा लगाना जारी रक्खा. जब कथा समाप्त हुई तो भूतभावन भगवान षिव जी ने देखा कि पार्वती तो सो रही हैं तो हुँकारा कौन लगा रहा था, यहीं सोचकर वे क्रोधित हो उठें, भगवान को क्रोधित देख तोता वहॉ से उड़कर फुर्र हो गया, पीछे-२ शिवजी उसे मारने के हेतु चल दिए. अनादिकाल में वहीं तोता शुकदेव जी के नाम से प्रसिद्ध हुआ और जो कबूतर गुफा में मिलते हैं भक्त उनके दर्शन पाकर बहुत प्रसन्न होते हैं वे कौन है-

भगवान एक बार संध्या के समय नष्त्य कर रहे थे कि गण आपस में ईर्ष्या के कारण 'कुरु-कुरु' शब्द बोल रहे थें तब महादेव जी को यह अच्छा नहीं लगा और उन्होनें अपने गणों को श्राप दे दिया कि तुम लोग दीर्घ काल तक यही शब्द 'कुरू कुरू करते रहो, उसी क्षण उनके गण कबूतर हो गये और वे ही आज तक उस गुफा में अमरनाथ बाबा के साथ वहॉ पर हैं. उनके दर्षन से मनुष्य जन्म जन्मान्तर तक अपने द्वारा किये पापों को धो डालता हैं और वह अमर लोक को प्राप्त होता हैं।

यह यात्रा भारत के अंतिम उत्तरी रेलवे स्टेशन जम्मूतवी उतरकर वहॉ से सड़क मार्ग से होते हुए गुफा तक जाने हेतू दो मार्ग हैं-१. जम्मू से श्रीनगर होकर पहलगॉव, चंदन बाड़ी, शेषनाग, पंचतरणी होकर जाता हैं. जहॉ यात्रियों को पैदल ४० किमी. की दूरी तय करनी पड़ती हैं. यहॉ जम्मू से पहलगॉव सड़क मार्ग की दूरी कुल ३५० किमी हैं.

२. जम्मू से श्रीनगर होकर कांगन, सोनामार्ग, बालताल होकर जाना होता हैं जिसमें पैदल १४ किमी. तक ही चलना पड़ता हैं परंतु इस मार्ग में चढ़ाई एक दम खड़ी होती हैं. यह यात्रियों के ऊपर निर्भर होता है कि वे किस मार्ग से जायेगें. भारतवर्ष के किसी भी शहर से जम्मू के लिए ट्रेने उपलब्ध होती हैं तथा महानगरों से हवाई मार्ग की भी व्यवस्था हैं. यात्री अपने सुविधानुसार यहॉ आ जाते है. वैसे भी कश्मीर तीर्थो का घर हैं. यहॉ पर आदिशक्ति जगदम्बा ने इसी क्षेत्र में अपना निवास स्थान बनाया हैं और उन्हें माता वैष्णों देवी के नाम से जाना जाता हैं. यात्री अमरनाथ जी का दर्शन करके वापस कटरा आकर मां का दर्शन अवश्य करते हैं और भगवान ब्रहमा, विष्णु, महेश ने भी इसे अपना निवास माना हैं, जिससे यह कश्मीर तीर्थमय हो गया. यहॉ ४७ शिवधाम, ६० विष्णुधाम तथा ३ ब्रहमधाम व २२ शक्ति धाम और ६०० जागधाम है.

जम्मू श्री नगर पहुचने हेतू- हवाई जहाज से-

इण्डियन एअर लाइंन्स व जेट एयरवेज की रोजाना उड़ाने हैं,इंडियन एयर लाईन्स

eu&Hkkou vkn'kZ ifr cus

dbpedbpe 'kekZ

अगर मौका लगे तो किसी किटी पार्टी मे जाएं और चुपचाप महिलाओं की बातों को गौर से सुने. पति की गैरमौजूदगी में इकट्ठी हुई सभी महिलाओं की बातचीत का मुख्य विषय पति ही होता है.

पतियों में पाई जाने वाली अनेक कमियों को लेकर मन किया कि इस परफेक्ट बाडी, परफेक्ट लुक, परफेक्ट ड्रेसिंग और परफेक्ट बच्चों के पैदा होने वाले माहौल में परफेक्ट पति की तलाश क्यों न शुरू की जाए. पति को परमेश्वर मानने वाले दिन अब लद गए. अब पति परमेश्वर नहीं, परफेक्ट होना चाहिए.

पति को पत्नियां चाहे परमेश्वर मानें या न मानें पर एक बात तो सच है कि वह कहने सुनने से परे हैं. पति कुल मिला कर एक महसूस करने की चीज हैं. आज समय की रफ्तार ने बहुत कुछ बदल दिया हैं. पुरूष हमेशा से ही सर्वगुणसंपन्न और सौंदर्यं से परिपूर्ण पत्नी की चाह करता आया हैं. लेकिन आज युवतियां भी युवकों को सर्वगुणसम्पन्न देखना चाहती हैं. यही वह स्थिति हैं जिस से आज महिलाएं बचना चाहती हैं और तलाशती हैं परफेक्ट पति. परफेक्ट पति कहीं बनावटी चीजों जैसा तो नहीं? महिलाओं का मानना है कि परफेक्ट का मतलब बनावटी पति न होकर एक स्टाइलिश पति की चाहत हैं. यह चाहत हमेशा से मन के किसी कोने में छिपी रही हैं लेकिन अब खुल कर सामने आई हैं. पति द्वारा अपनाया गया स्टाइल व संवेदनशीलता ही उसे परफेक्ट की श्रेणी में खड़ा करती हैं.

युवतियों की इस सोच के पति अपने आप में कितना ही महत्वपूर्ण क्यों न हो उन के सामने महज पति मात्र ही बन कर रहें, ने ही परफेक्ट या आदर्श पतियों की मांग को बढ़ावा दिया हैं. आदर्श पति की चाहत में युवतियां ऐसा पुरूष तलाशती है, जो स्थिरचित्त, दृढ़विश्वासी, संतुलित, धैर्यवान होने के साथ-साथ टिकाऊ भी हो, जो स्टाइल से गले मिले और मौका मिलते ही गाल भी चूमें. यानी संपूर्ण पति वह, जो शादी के रोमांस को जीवित रखने के लिए काम करें और रोमांच को महज एक चोंचला कह कर किनारें न रख दें.

❄

ds lEiidZ lw=&
2542735] 2546086] 2431433
tsV ,vjost& 2574312] 2574315]
2453888] 2453999 tgkW ls vki
vkj{k.k djk ldrs gSaA
blds vykok vkSj dksbZ tkudkjh ysuk
pkgrs gSa rks Vwfj'Te vkfQl] Jhuxj]
2477305] 2472698] 2477224 ls
Hkh laidZ dj ldrs gSa-

estk jksM] bykgkckn

जब क्रोध आये तो
खामोश हो जाओ:
अज्ञात

फूल अपनी खुशबू बॉटने
नही जाता बल्कि लोग
उसे अपने आप लोग
लेने के लिए चले आते.
अज्ञात

पल दो पल मुस्काना सीखें

MkW0 f=yksdh flag

मन के सब दुर्भाव मिटाकर
पल दो पल मुस्काना सीखें।
कटुता और द्वेष को त्यागें,
समय शेष हैं अब भी जागें,
नफ़रत की दीवार तोड़कर,
निन्दनीय कर्मो से भागें।
शिव बन विष को धरें कण्ठ में,
प्रेमामृत छलकाना सीखें।
मन के सब दुर्भाव मिटाकर
पल दो पल मुस्काना सीखें।।
जन-जन का संत्रास हरे हम,
पाप-ताप का नाश करें हम,
हर मनुष्य के अन्तर्मन में,
प्रेम और विश्वास भरे हम।
सद्विचार सद्गुण सौरभ से,
जीवन को महकाना सीखें।
मन के सब दुर्भाव मिटाकर,
पल दो पल मुस्काना सीखें।
कभी किसी को नहीं सतायें,
दीनों दुखियों को अपनायें,
भटक रहे हैं जो निज पथ से,
उनको उनकी राह दिखायें।
भूख प्यास से तड़प रहे जो,
उनकी सुधा मिटाना सीखें।
मन के सब दुर्भाव मिटाकर,
पल दो पल मुस्काना सीखें।।
त्यागें सारी स्वार्थ भावना,
परहित की हम करें कामना
सभी सुखी हों, सभी निरामय
करें ईश से यहीं प्रार्थना।
सत्य अहिंसा दया स्नेह का
उर में भाव जगाना सीखें।
मन के सब दुर्भाव मिटाकर
पल दो पल मुस्काना सीखें।।

ग्राम-हिन्दूपुर,पो. करछना, इलाहाबाद -०१

dkuwuh dkn

lelkef;d ,oa egRoiw.kZ dkn

cSadkfgd ekeyksa esa lek>kSrk gks tkus ij QkStnkjh ds ekeys lekIr dj fn;s tkus pkfg,–&mPp U;k;ky; &2003]51 ,- ,y- vkj- 222
dh-,l-tks'kizfrgfj;k.kk jkT; dkn

rF;&mDr ekeys esa ifr&iRuh ds e/; fookg ds ,d o"kZ dkn >xM+s mRiUu gks x;s A dqN le; dkn nksuksa i{kksa esa ikjLifjd lek>kSrs ds vk/kkj ij rykd gks x;k A rykd gks tkus ds dkn QkStnkjh ds ekeys esa iRuh us ;g 'kiFki= fn;k fd ifr ls mlds fookn lekIr gks x;s gSa vkSj ;g ekeyk lekIr dj fn;k tk;s ysfdu QkStnkjh ds U;k;ky; us ekeys lekIr ugha fd;s A mPp U;k;ky; us Hkh fjiksVZ fujLr djus ds bUdkj dj fn;k A mPpre U;k;ky; esa bl ekeys esa vihy dh x;h A

fu.kZ;&mPpre U;k;ky; us fjiksVZ] ifjokn o QkStnkjh ds eqdnesa fujLr djus ds fl)kUrksa dh fodr`r foospuk dh vkSj vius fu.kZ; esa fy[kk dh /kkjk 498 , dk mn~ns'; ifr vkSj mlds mu fj'rsnkjksa dks nf.Mr djuk gS tks iRuh ;k mudh fj'rsnkjksa dks ngst ysus ds fy;s izrkfM+r djrs gSa A ysfdu tc nksuksa i{kksa esa lek>kSrs gks x;s gSa oSokfgd dUnhd /kk;sa lek>kSrs esa dk/kd ugha cuuh pkfg, A oSokfgd ekeys esa U;k;ky;ksa dks dkxZ[dkUrfod lek>kSrs dks izksRlkfgr dkiz;kl djds QkStnkjh ds eqdnesa] izFke lwpuk fjiksVZ] ifjokn fujLr dj ldrk gSa A izfrikfnr fl)kUr&mPpre U;k;ky; us vius mDr fu.kZ; esa ;g fl)kUr izfrikfnr fd;k fd oSokfgd ekeyksa esa lek>kSrk gks tkus ij QkStnkjh ds ekeys lekIr dj fn;s tkus pkfg, A

;fn izR;{kn'khZ lk{kh x.k dk ifjlk{; fo'oluh; u gks rc vfHk;qDr dks vijk/k ds fy;s nks"'kfl) ugha fd;k tk ldrk gS–mPpre U;k;ky;] 2003] ist 447] n-fu-l-cynso ,oa vU; cuke e/; izns'k jkT; ¿nkf.Md vihy la[;k 275 o"kZ 2001À fnukad 6&1&2003 dks fofuf'pr ekuh; vkj-lh yksgkSVh] U;k;ewfrZ ekuh; c`ts'k dqekj—U;k;ewfrZ

fu.kZ;&Hkkjrh; n.M lafgrk] 1860&/kkjk 302&ds v/khu gR;k ds vijk/k ds fy;s nks"'kfl) &cS/krk&ekeyk dks izR;{kn'khZ lk{kh x.k ds ifjlk{; ij vk/kkfjr&nksuksa izR;{kn'khZ lk{kh x.k ,oa vfHk;qDr O;fDr;ksa ds ifjokj ds e/; dkQh fnuksa ls nq'euh &D'kkutjh lk{kh x.k dh lkbfdyksa ,oa >kfM+;ksa dh mifLFkfr izn'kZr ugha djrh Fkh &,l-,p-vks- }kjk izkIr Vsyh Qksu lUns'k dk dksbZ vfHkys[k ugha&{ksf=; eftLV~sV ds ikl izFke lwpuk fjiksVZ dh izfrHkstus esa og, foyEc dk dksbZ Li"Vhdj.k ugha&nksuksa izR;{kn'khZ lkf{k;ksa dk oFku lR; ugha ik;k x;k&nksuksa la;ksxh lk{kh x.k&lk{kh x.k ds ?kVuk LFky ij ekStwn gksus dk dksbZ Bksl dkj.k izn'kZr ugha&buksuksa lk{kh x.k ds ifjlk{; fo'oluh; ugha&vfHkfu/kkZfjr] bu nksuksa lk{kh x.k ds ifjlk{; ds vk/kkj ij nksuksa vfHk;qDrx.k &vihykfFk;ksa"'kfl) ekU; ugha dh tk ldrh gS& nks"'kfl) vikLr&vihy vuqKkr A

Hkkjr ds lafo/kku ds vuqPNsn 226 ds v/khu fjV vf/kdkfjrk esa mPp U;k;ky; Hkkjrh; n.M lafgrk dh /kkjk 406 ,oa 409@ds v/khu vijk/kksa ds fy;s vkjksfir fd;s x;s vihykFkhZx.k dks fxj¶rkj djus ds fy;s jkT; dks funZs'k ugha dj ldrk gS u gh og vUos"k.k ,tsUlh dks vjksi&i= nkf[ky djus dk funsZ'k ns ldrk gS–mPpre U;k;ky; ist 395] n-fu-l- ,e-lh-vczkge ,oa vU; cuke egkjk"V" jkT; ,oa vU; ¿nkf.Md vihy la[;k 1346&1352 o"kZ 2002À fnukad 20&12&2002 dks fofu'pr ekuh; ,u-lUrks'k gsxM+s—U;k;ewfrZ ekuh; dh-ih-flag———U;k;ewfrZ

fu.kZ;&n.M izfdz;k lafgrk] 1973&/kkjk 406 ,oa 409@34&Hkkfo"; fuf/k vk;qDr }kjk ,e-,-ih-,y- ds funs'kdksa ds fo:) ifjokn&ftlesa /kkjk 406,oa 409@34 ds v/khu vijk/k dk vfHkdFku fd;k x;k Fkk&n.M izfdz;k lafgrk dh /kkjk 438 ds v/khu vfxze tekur vkosnui= vLohd`r&ifjokn ij dk;Zokgh djus ds fy;s jkT; ds fo:) fjV ;kfpdk&mPp U;k;ky; us jkT; dks ,e-,-ih-,y- ds funs'kdksa dks fxj¶rkj djus ,oa vUos"k.k vfHkdj.k dks vkjksi&i= nkf[ky djus dk funsZ'k fd;k Fkk&mPpre U;k;ky; ds le{k vihy&vfHkfu/kkZfjr] mPp U;k;ky; dk n`f"Vdks.k mfpr ugha&vihy vuqKkr A

fufnZ"Vdkn&1980 ¿1À ,l-lh-lh- 554- 1994 ,y-vkj- 71 vkbZ-,- 203- 1970 ¿3À ,l-lh-vkj- 946- ,- vkbZ-vkj- 1968 ,l-lh- 117 A

lkfgRdkjksa ls

1.यदि आप अपनी कृति (काव्य संग्रह, ग़ज़ल संग्रह, कहानी संग्रह, निबंध संग्रह, उपन्यास) का विज्ञापन इस पत्रिका में छपवाना चाहते हैं तो रु0 100/–का मनिआर्डर तथा एक प्रति पुस्तक की भेजें
2.यदि आप अपनी कृति (काव्य संग्रह, ग़ज़ल संग्रह, कहानी संग्रह, निबंध संग्रह, उपन्यास) प्रकाशित करवाना चाहते हैं तो प्रकाशकों के यहॉ बारम्बार चक्कर लगाने से बचें. हमें जबाबी लिफाफे के साथ लिखें:

cpiu ls iwoZ dQ+u dh vksj tkrs cPpksa dks cpk,a

dM+s&dpjs] fHk{kkoa/kopketnwjhesa ftanxh ryk'krs cPpksa ds f'k{k.k Lokoyacu esa yxh l|%Lukr lsok laLFkk T;ksfr vdkneh dks vkich vko';drk gS- fcuk fdlh 'kklch; vuqnku] fons'kh nkuksa] ifjokjo fe=ksa ds lg;ksx ls bl dY;k.kdk;Z esa lefiZr vdkneh dh lapkfydk ^uhye^ th ds vuqlkj ,d cPps ij ek=nks lkS a :i, ekfld O;; vkrk gSa- ,d nks cPpksa am)kj dk nkf;Ro dksbZ Hkh [kkrk&ihrk O;fDr Lohdkj djldrk gSa- fokgj ikfVZ;ksa] e`R;q Hkkst vkfn esa yk[kksa Lokgk djus dk ys leFkZ lekt dks bl fn'kk esa dqN R;kx djuk gh pkfg,- vius gh {ks=esa laLFkk dh 'kk[kk xfBr djds Hkh bl ijfgr lk/ku esa 'kjhd gqvk tk ldrk gSa- lekt o fl;klr dh O;oLFkk cl cpiu ls iwoZ dQu dh vksj tkus dks foo'k bl ekluweksa dk fueZ.k Hkkmudh raiap&Rksa ls gqpkgS a ftu ls ge lcdk- vius&viuksa ds fy, i'kq&i{kh dhV iarxs lHkh thrs&ejrs gSa- eud";rk dk vk/kkj ijksidkj gSa- bu cPpksa us vHkh dqN Hkh ft;k&ns [kk fd;k ugha] bUgsa cpkus&lackjus ls csgrj lekt lsok vkSj D;k gks ldrh gSa- pkgus fy[kus dks yus ds dkotwn ge ^" kqHk ds fy, fØ;k'khy ugha gks ikrs- tks igyo djjgs gSa] muds gkFk rks ge dWk gh ldrs gSa- bu cPpksa dks cpkus ds fy, lqJh uhye th ls tqM+s -jk'ku] d=] ikB~; lkexzh Hkh Lohdkj- eud";rk ds izfr vklFkk dk ulaosnu'khy gekjs fiz; ikBdksa ls vuqjks/k gS fd ogbl laLFkk dks ;Fkks fpr ru&eu& /ku ls lg;ksx iznku djsa-

laidZ% **uhye]** izHkkjh T;ksfr vdkneh] 145] iRRkk ekxgYyk] ckxir] xsV] esjB&250001] m-iz- nw-0% 01212401977

xhty

dj ldsa rks Hkyk dhft,
er fdlh dk cqjk dhft,
gj dksbZ gks lq[kh gj txg
lcds fgr esa nqvk dhft,
/keksZ etgc lHkh ,d ls
lkjs etgc feyk rhft,
I;kj ls fnyydkyc Hkjsa
uQjrksa dks tqnk dhft,
egdsa lkjs peu fo'ods
Qwy ,sls f[kykrhft,
vEugh lkjh /kjrh is gks
no[eu hdks Hkxkrhft,
pan?kfM+;ksa dks esgekuqks
ekSr vk;sxh D;k dhft,\
fnyesa yksxksa ds ,slk tcp
viuk ?kj rks clk yhft,A
KkusUnz lkt] vyhx<+] m-iz-

vupkgk ir>j

jktsUnz cpkj 'kq;Dy

o"{k&o"{k ds xkr&xkr ls]
gfjr&ihr jax ikr >jx;sA
cumiou ru gq, vuko'r
ir>j dk vkHkkl ns x;sAA
uhe ikr gr Ma<y lwus
beyh >jh vkWboyk >jx;sA
egqvk vke iyk'k 'kfDrgr
rqylh xsank xqykc >jx;saAA
'khrfLDr/kqfrghu ia[kqjh
jkrksa jkr reke >jx;hA
'khrtyk dj Hkze QSykrh
fcuk lw;Z ds xkr ty x;hAA
vksyk ikyk dks gojk cmjh
tkus dSlh utj yxk;sA
'khriwl dh rksigjhesa
v/kZ clUrh vljfn[kk;sAA
ekSle cnyk _rq;sa cnyh
gkM+dWikrh jkrsa cnyhA
'kr&'kr o"kZZ ds ekudcnys
i'kq i{kh dh vkgV cnyhAA
xje /kwi dh uje /kwi dh
pkg izd`fr ds lq/kj :i dhA
vutkus vkgwr dky ls
fdrus tu ds izku gj x;sAA
o"{k&o"{k ds xkr&xkr ls
gfjr ihr jax ikr >j x;sA
cluscVk] iks- nsoyh&ekslyk frjkgk] bykgkckn

IusgO;atu

flds gq, 'kkgh dkQ;sa

Ikexzh% lwth] xsgwa dk vkVk] yky fepZ ikmMj] gYnh] vtok;u] thjk] ued] dktw] dknke] fiLrk] fd'kfe'k] ?kh-

cukus dh fof/k% lwth o vkVk leku ek=k esa ysdj feyk ysa] fQj blesa yky fepZ ikmMj] gYnh] vtok;u] thjko Loknkuqlkj uedMkys o vPNh rjg ls feyk ysa- fQj ?kh dks FkksM+k xje djds eks;u ds fy; sa vkVs esa Mkydj vPNh rjg ls feykb;sa- vc xje ikuh djds mlls vkVk yxk ysa- vkVk yxkdj mlds xksys cuk ysa- tc xksys cu tk;sa rc xksyksa esa fd'kfe'k] dktw] fiLrk o dknke ds nks nks VqdM+ksa dj ds mlesa Hkjs vkSj xksys ds chp esa FkksM+k nck ysa- vc Hkxksus esa xje ikuh djsa o lHkh rS;kj fd;s gq, xksyksa dks ikuh esa Mkydj mcky ysa- tc xksys vPNh rjg ls mcy tk;s rc mUgsa ikuh ls dkgj fudky ysa- vkSj muds nks fgLlsa esa dkV ysa-

vc vksou ys vkSj mls xSl ij j[ksa tc vksou xje gks us yxs rc dVs gq, xksyksa dks mlesa Mkydj lsads a- tc xksys vPNh rjg ls fdl tk;sa rc mUgsa vksou ls dkgj fudkys a vkSj muds a ?kh esa Mkys a- bl rjg flds gq, 'kkgh dkQ;ksa rS;kj gSa- ijksls rs a le; dkQ;sa dks pwj djmuesa ?kh Mkydj nky o gjh pVuh ds lkFk is'k djsa- bl rjg flds gq, 'kkgh dkQ;h dks [kkdj vkuann mBk;sa- **'csrk esa+y]** ,u-,-2@102, vtesjk] fiijh] iq.ks&18

dfork,a

iRFkjizse

iRFkj&iRFkj ghgksrkgS]
mlesa Hkkouk vksa dk vadqj]
dHkh i vadqfjr ugha gksrkgS]
ogrks cstku ghgksrkgS]
blhfy, lRlSo funzkesa gksrkgS]
vr% mlesa ^izse&Hkko^ foyqIr gksrkgS!

rq>s uaxk gksuk gksxk

eq>s ^uaxk^ gksuk gS a!
tkursgSa D;ksa\
D;ksafd bl ;qx esa lHkh]
d=ksa dks igudj Hkh]
uaxsgh rks gSa\
D;k vki dks ugha yxrk ,slk\
tc gh dgr ;g gSa]
rks dL= igus ch rq dkj D;ksa\
vkt esjk tehj]
eq>s fujarj djksV jgk gSa]
og fujarj ;gh xqgkj djrk gSa]
rq>s uaxk gksuk gksxk!
dc rd vks<sxk]
fn[kkos dk pksxk]
ftlls [kk;sxk izk.kh lRlSo/kks [kk!
vr%]
rq>s uaxk gksuk gksxk!

lq.hy mik/;k;] vgenkckn] xqtjkr

1-xt+y

xkaB dks iwjs ls py ;kjh ;kj dsa
fQj ls nkor dh rS;kjh ;kj djsa—
dPps dks ys ns[kns [kd j dks jgq,]
pyVh dh lhekjkekjh ;kj djsa—
vk;k gS jet+ku cgkuk vPNk gSa]
ge Hkh bdnkor b[rkjh ;kj djsa—
ns[krks vkos dk vkdk gh Å x;k]
ge fcll fcllch igjsnkjh ;kj djsa—
geus mZ dks lka>k djuk NksM+ fn;k]
py ge Hkh dkrsa v[kckjh ;kj djsa—
thouesa dqN vPNk djuk vPNk gSa]
ugha jgs rks dkrgekjh ;kj djsa—

2-

dke ugha dj rs n[krjesa fcuk fy;sa
?kjHkh vkrsa ugha fcpkjs fcuk fi;sa—
D;k dekyg S ;kj dfo Hkh vQ+lj Hkh]
;kus ;kj djsyk dks Hkh uhe fi;sa—
viuh dks Bh dh yfM+;ksa dh /kweepsa]
rksM+>ksM+h] pyksa cq>krks lHkh fn;s—
[ksyfurjksy Hknzt uksa dh dlrh ds]
cngok lh ixyh fQjrh isV fy;sa—
laHkogksrks [kqn dks ikxydj Mkyksa]
ejus dk lq[k d c feyrk gS fcuk ft;sa—
rst gokvksa ls D;k Jrk cnysaxsa]
ge fQjrs gSa lhus esa mQ+kufy;s—
dqNiku s dh [kkfrj [kksuk iM+rk gSa]
dc feyrk gS Qy thou esa fcuk fd;s—
lr;qx gks rks ge Hkh 'kadj gks tkrs]
gj reghrks fQjrs gSa fo"kiku fd;sa—
lr;qx gks rks ge Hkh 'kadj gks tkrs]
gj reghrks fQjrs gSa fo"kiku fd;sa—
taxy ;qx esa tkus dh rS;kjh gSa]
vcrks dlM+s igusa xsa Hkkb Z fcu fl;sa—
gSa lkjs gS jku ^eksnfxy^ vpjt gSa]
ih;s yxrk gWa gksrk gWa fcuk fi;sa—

;ksxsUnz ekSnfxy] ikuhir] gfj;k.kk

xt+y

uyM+ ik;k fn;k tc vkaf/k;ksa ls A
rks fj'rk djfy;k rkjhfd;ksa ls AA
feys dqN Hkh lt+k] eSa lpdowaxh A
;snqfu;k Hkj xbZ gS a ikfi;ksa ls AA
igsyh jks t+s&Ooy ls gS SgurhA
blo>saxsageHkh 'kksf[k;ksa ls AA
mls dks vkt rd Hkwy k ugsh gSA
Q+jsc mlus tks [kk;k fnrfy;ksa ls AA
fuxkgsa Fkdxb Zdy 'kc rks esjhA
u>ka dk pkan dyh cnfy;ksa ls AA
x+eksa dh vksVesa cSBh rgha eSa A
eq>s ns[kk urqeus duf[k;ksa ls AA
dsk bZHkh eLvyk gks ftUnxh dkA
gpvk gS gy dHkh D;kxksfy;ksa ls AA
porjk dj ysu tk, jkSuksa dks A

gokv&,&xeZ] viuh ckfn;ksa ls AA
;ogh ours jgsa xsa ^jkt^ eqtfjeA
utkM+ksa xsa mUgsa tks jksfV;ksa ls AA

MkW0 jktcgknqj 'kekZ ^jkt^

$$$$$$$$$$

xt+y

ft+Unxh dh /kwi <yrh tk jgh gSa
'kke dh L;kgh ut+j vc vk jgh gS
'kDl dk vc D;k Hkjkslk] dc
<ysxk\
rhjxh lh ,d fny ij Nk jgh gSaA
fdrus vjekuksa dks ysMksyh ltkbZ]
gljrksa dks lkFk dks ys tk jgh gSaA
rkSurksa usnwjls eq>dks aiqdkjk]
mudks D;k ekywe vt+y dc vk
jgh gSA
jatks x+e dk dkSu fudVkjk djsxk]
,d xgjh uhan eq>dks vk jgh gSA
pUn fnu ysdj ;gkWa balku vk;k]
ns[k yks dqnjr dgj vc <k jgh gSaA
dkaVks tks Hkh [kq[kh ruqe dks feyh gSa]
vcQ+uk gksus dh dkjh vk jgh gSA

Hkkxor izlkn feJ ^fu;kt^

,Q-,Q-&4] ch] Cykw d] lu ikoj ¶ySV~l] xq:dqy jksM] vgenkckn&280052

$$$$$$$$

xt+y

rq>ls gh lcgk fly gSa]
rwgh viuh eafty gSaA
mlls feyuk vkalk gSa]
[kqn ls feyuk eqf'dy gSaA
esjk viuk viuk D;k]
lcdqN rq>esa 'kkfey gSaA
eSa rks clbo lrwQkWa gwWa]
rwgh esjk lkfgy gSA
rq>ls feydj irk pyk]
^xqy'ku^ fdruk dkfcy gSa-

MkW0 v'kksd ik.Ms;] ^xqy'ku^

dkuwuxksa iqjk] mRrjh] cgjkbp] m-iz-

y?kqdFkk,a

'kkfax

cM+s lkgsc rF;rj ds lHkh deZpkfj;ksa dks funsZf'kr djrs gq, dksys dy jsyos LVs'ku ij lHkh yksx V~su NwVus ls vk/kk ?k.Vs igys igqap tk;axs&bl fidfud dks ;knxkj cukuk gSa-bruk lqurs gh f=ykspu mB [kM+k gqvk lkgc ls dgus yxk lkgsc eq>s LVs'ku tkus esa fnDdr gksxh&esjk ifjokj cM+k gS vkSj ?kj Hkh nwj gSa-cM+s lkgsc blesa fnDdr dh D;k ckr\ ugha Mªkboj LVs'ku rd eq>ks NksM+ nsxk&bl dh cp ,d vf/kdkjh eq>ksn; Hkh dksy cSBs&esjs ifjokj dks Hkh NksM+ nsxk&f=ykspu ds ifjokj ds lkFk tcfd [kqn dkj ekfyd Fksa-cM+s lkgc us lgefr ns nh- fu/kkZfjr frfFk dk f=ykspu vkSj mldk ifjokj izkr% ugk/kks dj rS;kj gks x;k- vius lkeku ds lkFk ij Mªkboj ugha vk;k-bl dh p dbZ dkj f=ykspu cM+s lkgsc dks Qksu yxk;k ogka ls ;gh dgk tkrk fd igqapus okyk gksxk- og rks ukS cts dk gh fudy x;k gSa-ijs'kku gksdj f=ykspu ml vf/kdkjh dks Hkh Qksu yxk;k rks mlds ;gka Hkh ugha Mªkboj igqapk oSls Hkh ;g Mªkboj igqapk oSls Hkh ;g Mªkboj Hkh rHkh oT;knk gh djrk Fkk&gk vius LokFkZ dks Hkjiwj rO;Tks ansrk Fkk ckdh nwljs dh ?kh dh xxjh <jdrh jgs tjk Hkh ijokg ugha djrk Fkk&Fkd dj iqu% cM+s lkgsc ls lEidZ fd;k- f=ykspu rc rd cgqr ns gks pqdh Fkh&V~su NqVus dk le; fl j ij vk pqdk Fkk- f=ykspu rks vkVksa fjD'kk dj ds LVs'ku igqapk&nwljs vf/kdkjh viuh dkj ls igys gh igqap pqds Fks vkSj os f=ykspu dks fyfVu ugha ns lds a- 'kk;n vius cM+s gksus dh otg ls a-f=ykspu ds LVs'ku igqapus ls igys xkM+h dks tkus dk ladsr feyp pqdk Fkk-cM+h eqf'dy ls tku ij [ksy dj f=ykspu vkSj mldk ifjokj V~su esa ?kql ik;k-m/kj dk ilhus ls anwljs lkgsc V~su ls mrjs rks f=ykspu ls iwNus yxs f=ykspu ?kj rd vkWVksa fjD'ks dk ykk fdruk fdjk;k yxk- rc f=ykspu dks yk vjs lj vkrs le; ftruk fy;k Fkk mruk gh yxk- rc vf/kdkjh dks ys vjsa esjk cSVk dkj ls NksM+ x;k Fkk-f=ykspu vkSj mlds ifjokj dks Mªkboj jsyos LVs'ku ugha NksM+k-;g ckr cM+s lkgsc ds ikl igqaph- rc Mªkboj dks yk&eSa rks vius chch cPpksa ds lkFk dkj ls 'kkfiax djus x;k Fkk-

---

fo|ksRlo

rks vDVwcj ds Bhd pkSng o"ksa fnu s'k ds dqN tu izfrfuf/k;ksa dk ,d lfefr }kjk dqN izfrf"Br laLFkkuksa ds dke dkt dk fujh{k.k Fkk&tks laLFkk;sa ns'k tu lsok] lerk lgdkj o mRFkku djus dk nkok djrh Fkh-bUgha laLFkkvksa esa ls ,d laLFkk Fkh ftlesa cPpksa dks [kq'kh jke viuh gkM+ Qksa Mesgur ls laLFkk ds fgrkFkZ dke djrk Fkk rFkk [kqn ds vkLwvksa ds jax ls viuk Hkfo"; lakjus dh dksf'k'k dj jgk Fkk- fo'kerk ds tgjhys ?kqaV ihdj- uke rks [kq'khjke Fkk] ij Fkk cgqr nq[kh-

fujh{k.k lfefr ds 'kgj esa vkus ds iwoZ vkSj tkus rd [kq'khjke ls oSls gh dke fy;k x;k tSls ?kksM+s dh iwaN ds mij fjlrh ?kko ij pkcqd ekjdj- fujh{k.k lfefr 'kgj ds cM+s gksVy esa #dh [kwc t'u euk;k x;k- ftlesa laLFkk ds vQljksa us [kwc vkuUn mBk;sa vkSj fujh{k.k lfefr ds lnL;ksa dk D;k iwNuk-gka] [kq'khjke dks bu lc t'uksa ls nwj gh jD[kk x;k- fdlh uk fdlh fo"ke n dh otg ls- gka t'u rks dbZ fnuksa rd [kwc tek Fkk- [kq'khjke }kjk cuk;h x;h vUQjiwfrZ jiVus jax gh tek fn;k Fkk-ij t'u vkSj Js; ls [kq'khjke dk uke dks ls nwj Fkk- 'kk;n uUgk in gks us ds ukrs-

,slk D;ksa\

ikikth ej x;s dk lekpkj QSy x;k- D;ksa uk QSyrk cM+s lkgc ds firkth Fksa mij ls usdbala ku Hkh- yEch chekjh ds ckn vLlh cjl dh mez esa muds nsgkoalku gqvk Fkk-cM+s lkgc dEiuh esa cM+s in ij inklhu Fksa-firkth ls muds dkQh yxko Fkk-cgqr ls ck lqUn'kk fd;s Fks-ikikth Hkjk iwjk ifjokj NksM+dj LoxZ jksg.k fd;s Fksa-ikikth ds vfUre laLdkj esa nQ~rj ds yksx nQ~rj dh xkM+h ls vfUre laLdkj esa x;s ij NksVs ckcw dks ugha iwNk x;k-NksVs ckcw chekjh gkyr esa fcuk fdlh f'kdk;r ds ikikth ds vafre laLdkj esa 'kkfey gksdj J)katfy ds lkFk iq"ikatfy vfiZr dj vk;sa-mBkouk ds fnu nQ~rj ds lHkh rFkkdfFkr lkgsc yksx lifjokj iqu% nQ~rj ds okgu ls gh x;sa ijUrq bl ckj ekgkSy cnyk cnyk Fkk-NksVw ckcw ls fNik;k tk jgk Fkk-ij NksVw ckcw dks yksxksa ds gkoHkko ls irk py gh x;k Fkk-NksVs ckcw dks vius NksVsiu dk Hkjiwj ,glkl Fkk-tSls fdlh fjlrs ?kko dk mZ ih fM+r dks ;kn jgrk gSa-NksVw ckcw Hkh rHkko ds neM+rs nfj;k dks ns[k dj fry fey k tkrs ij os urks cM+s lkgsc Fks ukgh cM+h fcjknjh ds vkf[kjokj Hkh ndkna'k Loj Qw V gh iM+k vpkud muds eqag ls fudy x;k vkg vjs ,slk esjs lkFk gh D;ksa gks rk gSa-

uUnyky jke Hkkjrh] vktkn nhi] 15&,e&ch.kkuxj] bankSj] e-iz-&452010

lkfgfR;dxfrfof/ka;k dk;Z0 laikfndkMkW- ^ljy^ dks lkfgR; jRu

fo'o fgarh lkfgR; lsok laLFkkuds }kjk fo'oLusg lekt dh dk;Zdkjh laikfndkMkW- dqlqeyrk feJk ljy ds 50osa tUe fnol ds volj ij jk"V^h; fgarhekfld ^fo'oLusg lekt ds lg;ksx ls ,d ;qpk dkO; izzfr;ksfxrkdkvk;kstufd;kx;k- blizfr;ksfxrkesausSuhdscgqpfpZr ;qpk dfobZ'oj 'kj.k 'kqDy dks izFke] izhreuxjdsvo/ks'keksS;kZdks f}rh; rFkk Lusgyrkdks r`rh; LFkku izkIrgqyk-

bl volj ij MkW0 dqlqeyrk feJk dks lkfgR; jRudh lEekuksikf/k ls Hkh lEekfur fd;kx;k- blds igys ;g lEeku Hkkjrh; jk"V^h; i=dkj egkla/kds la;kstd,oa lkfgR;ktafy izHkkds laikndMkW- Hkxokuizlkn mik/;k; dks fn;ktkpqpk gSa- dk;Z0e dk izkjEHk 10 dfo;ksa ds dkO; laxzg lqizHkkrds foekspu ls izkjEHk gqvk- blds ckn ;qpk dfo;ks aus viuh jpuk,a izLrqr dh- ijdhu tgkWus&

tcvknehds isVesa vkrhgS jksfV;ka] Qwyhughacnuesa lerhgS jksfV;ka bVkokdsdfo txrh'kpUnzz dh&

vkf[kjhowan [kwudh lw[ktk;s] ;s fdydkfj;ka coyUh lnk xwtrh jgsa vo/ks'kdbekjekS;kZdh&

ns[kks! lM+dk ij pyrh cqf<+;k >ksyhyVdk,adkgksaesa] vutkuxyhesa bl }kj ls ml }kj rd dkowHkS;kdkgdjgkFkilkjs bZ'oj 'kj.k 'kqDy dh&

tcxqtjrkgWwQwyksa ds iFk ls] srcegdjksdnsrhgSa ixdks v'kksdxqIrkdh&

Lora=gsgeHkhLora=gSa dkQh ljkgh x;h-

blds vykok fu.kkZ;daeMyesa 'kkfey dqVs'oj ukFk f=ikBh ^fpjdkW bykgkckn^] MkW0 Hkxokuizlknmik/;k;] MkW0 dqlqeyrk feJk] f"koizlkn iky] xhrk nsch us Hkh dkO; ikB fd;k- dk;Z0e dh v/;{krk dj jgs lekt Jh lEekuls lEekfur] tgkW'kkrj esekfj;yvLirky ds funs'kd MkW- vuokj vgenus dgk&lHkh O;fDr;ksa dks ;qpkvksa dks gj rjg ls izksRlkgu nsdj vkxs c<+us esa enn djuh pkfg,- lekt esa vlgk;ksa ds lg;ksx ds fy, vkxs vkuk pkfg,- fo'o fgarh lkfgR; sl sck laLFkkuds lfpo Jh xksodys'oj dqekj f}osnh bl dk;Z esaaaaaaegRoiw.kZ Hkwfedk vnk dj jgs gSa- dk;Z0e ds fof"k'V vfrfFk Jh gjthr flagekjokus Jh f}osnh ds dk;ksZ dh ljkguk dh rFkk ;qpk dfo;ksa dks eap nsus ds fy, /kU;okn fn;k- dk;Z0e ds nwljs fof"k'V vfrfFk Jh ,l0ih- flag phQ dksvkfMZusVj ,Dwizs'kj,oa 'kks/k laLFkku] usMkW- feJk dks tUe fnu ij c/kkbZ nsrs gq, dk;Zdze dh ljkguk dh- lq[h xhrk nsch us Hkh viuh Lofyf[kr ,d lksgj ls MkW- feJk dks tUe fnu dh c/kkbZ nh-

dk;Zdze dk lapkyu fo'oLusg lekt ds laikndo fo'o fgarh lkfgR; lsok laLFkkuds lfpo xksodys'oj dqekj f}osnh us fd;k- bl volj ij lSfQ;UV laLFkkuds lfpo] gjfdjr flag] lekt lsch irfoUrj flag] Jh bUnzthr flagekjok] jkts'k flag] vkfnmifLFkrFksa-

cuk fy;k gS tks eSaus eokudkxt ij fleVx;k gS esjh ek a dk /;ku dkxt ij rLYhrs jgkgWw>wBhow<hvkW[ksadks fn[kkrk jgrk gWwnksuksa tgku dkk ijA cnyu ik;sxk rwvc dHkh topka viuh fd fy[k x;k gSa rsjk lc c;ku dkxt ij peu ds Qwy rks lkjs dopy fn;s ysfdu f[kyk jgk gSamUgsa ckxokudkxt ij t+eh is ns [kus ls gedgha uns [k lds [kqnk x, gSa dq; esgjckudkxt ij ubZ lrh dh nM+kus gS csijksa dh exj mrkj yk, gSa lc vkleku dkxt ij fc[kjh /kfT;ksa dks ns [kns [k lM+dksa ij flld jgk gSa esjk lafo/kku dkxt ij rsjs fcVkus ls gjfxtu fcV lds xsa dHkh eSaNksM+ tkÅ¡xk ,sls fu'kkudkxt ij fdlh dks ekyvkS nSkyr is xqeka gS vius ^lkt^ dks nksLrksa c l gSa xqekudkxt ijA

KkusUnz lkt] lEiknd] ttZj d'rh] 17@12] t;xat] vyhx<+&202001] m-iz-

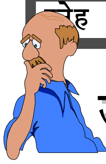

राजरानी चाय जरा हंस दो मेरे भाय

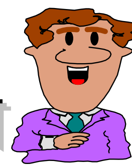

☠रोहित (अपने दोस्त मोहन से)-यार मैं सोचता हूं कि मैं इस गॉव में एक छोटा सा क्लीनिक खोल लूं, तुम्हारा क्या विचार हैं?
मोहन-खोल लों, अच्छा विचार हैं. लेकिन इस बात का ख्याल रखना कि यहॉ का कब्रिस्तान बहुत छोटा हैं.

☠मरीज (डाक्टर से)-डॉक्टर साहब, आपने नर्स बहुत अच्छी रक्खी हैं. उसका हाथ लगते हीं मैं ठीक हो गया.
डॉक्टर-हॉ, जानता हूं. कुछ देर पहले मैंने चांटे की आवाज भी सुनी थी.

☠डाक्टर (मरीज से)- अगर तुम शराब पीना छोड़ दो तो सौं साल तक जी सकते हों.
मरीज-लेकिन बिना शराब के सौं साल तक जीकर मैं करूंगा क्या?

☠ डाक्टर (मरीज से)- देखों , तुम चिन्ता करना छोड़ दो तो तुम ठीक हो सकते हों?
मरीज-लेकिन चिन्ता करना छोड़ू कैसे डाक्टर साहब?
डॉक्टर-क्यों, तुम्हें आखिर चिन्ता क्या हैं?
मरीज- अभी तो आपके बिल की चिन्ता हैं.

☠ विधानसभा चुनाव में एक उम्मीदवार जनसम्पर्क करते हुए एक वोटर से बोला, 'भाई साहब, ध्याना रखिएगा. मैं खड़ा हूॅ!. वोटर ने बगल में पड़ी खाली कुर्सी की ओर इशारा करते हुए कहा-'अरे, तो आप खड़े क्यो हैं, बैठ जाइये न.

राहुल देव,
६१४८, कोतवाली मार्ग, महमूदाबाद, सीतापुर,

☠ जज- साफ-साफ बताओं यह आदमी कैसे मरा?
मुजरिम-यह बचपन से ही बहुत भुलक्कड़ किस्म का आदमी था इसलिए सांस लेना भूलगया होगा.

☠टोनी-यार, तुमने जो पौधा मेरे घर के गमले में लगाया था, वह अभी तक बढ़ा नहीं.
जॉन-तुम्हें कैसे पता चला?
टोनी-क्योंकि मैं उसे रोज उखाड़कर देखता हूॅ.

☠ भगवान- तुम नरक में जाना पंसद करोगें या स्वर्ग में?
व्यापारी-जी, आप मुझे स्वर्ग और नकर दोनों के बीच में जगह दें दीजिए जिसमें दोनों तरफ के ग्राहक मिल जाएगें.

राजा हो या रंक, सबकी पसंद राजरानी चाय

हमारे अन्य प्रोडक्टः

राजरानी सब्जी मसाले, राजरानी हल्दी, राजरानी लाल मिर्च, राजरानी सेवई, राजरानी ऑवला चूर्ण, राजरानी चटपटा, राजरानी हीग, राजरानी मीट मसाला,

निर्माताः श्री पवहारी इण्डस्ट्रीज,इलाहाबाद

चुटकुले भेजिए और पाइए राजरानी चाय के पैकेट मुफ्त

अच्छे चुटकुले भेजने वाले व्यक्ति को राजारानी चाय की तरफ से ५ किलों, २ किलों, १ किलों, ५०० ग्राम, २५० ग्राम के चाय पैकेट मुफ्त दिए जायेंगें.

इधर-उधर की

अपनी मां का पति

राजा इंडीपस द्वारा अपने पिता की हत्या और फिर अपनी मां से विवाह करने की यूनानी कथा भले पुरानी पड़ गयी हो, लेकिन आज भी ऐसे लोग मिल जाते हैं, जो उसकी याद ताजा करा देते हैं. निकारागुआ के ३२ वर्षीय बेटे जेफरी सिल्वा पाशिकों द्वारा अपनी ही ६५ वर्षीया मां फ्लोरेंसिया सिल्वा से विवाह का मामला प्रकाश में आया हैं. लेकिन जहां इंडीपस ने अनजाने में अपराध किया था, वहां जेफरी ने ऐसा फरेब के तहत किा हैं. दरअसल फ्लोरेंसिया अपने मुल्क की मुफलिसी से तंग आ चुकी थी, इसलिए मां-बेटे ने १९८७ में ब्याह का स्वांग रचा कर कोस्टारिका की नागरिकता हासिल कर ली, नौकरियां पा ली और चैन से रहने लगें. लेकिन पाशिको जिस कंपनी में नौकरी करता था, वहां रूपयें की हेराफेरी में फंस गया. मामला पुलिस में गया. जांच पड़ताल हुई और भेद खुल गया.

fo'o fgarh lkfgR; lsok laLFkku] bykgkckn }kjk izdkf'kr iqLrdsa

1-e/kq'kkyk che/kqpkyk% ys[kd jkts'k dqekj flag ew0 10-00

2-lqizHkkr% nl jpukdkjksa dk laxzg ew0% 10-00

3-fiÌkrantÜr lans'k% ys[kd Jhpksa S0 ij'kqjke fu'kkn] ew0 10-00

iqLrdksa ds fy, Hkstsa@fy[ksa%
e.h vkMZj@Mh-Mh-
lfpo] fo'o fagh lkfgR; lsok laLFkku]
,y-vkbZ-th&93] uhe ljk;] dkWYksuh] eq.Msjk] bykgkckn

साहित्य मेला की कुछ झलकिंया

श्रीमती हेमा उनियाल व अन्य विद्धजन

सुर्य देव पाठक 'पराग' सम्मन लेते हुए

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान

संस्थान की प्रगति रिर्पोट

संस्थान ने अपने अत्यल्प समय में ही देश के १५० साहित्यकारों, २५ पत्रकारों, १० समाज सेवियों को सम्मानित करने का गौरव हासिल किया है. कुछ निर्धन साहित्यकारों के संग्रह का प्रकाशन कर चुकी हैं. संस्था ने हिंदी भाषी राज्यों के साथ ही साथ अहिन्दी भाषी राज्यों में भी अपने पॉव पसार दिए हैं. संस्थान द्वारा २००४ से निरन्तर बहुचर्चित साहित्य मेला का आयोजन किया जा रहा है. इस आयोजन में देश के कोने-कोने से ख्यातिलब्ध साहित्कार, पत्रकार, संपादक भाग लेते है. इस मेले में पुस्तक प्रर्दशनी, परिचर्चा, कवि सम्मेलन व सम्मान समारोह का आयोजन किया जाता है. पाठकों देश की हजारों पत्र-पत्रिकाओं को जानने व समझने का सुअवसर प्राप्त होता है. संस्थान द्वारा कुछ उपाधिया भी दी जाती है-जैसे विद्या वारिधि, विद्या सागर, विद्या वाचस्पति, साहित्य गौरव, साहित्य रत्न, पत्रकार रत्न, सम्पादक रत्न, समाज श्री, साहित्य शिरोमणि. प्रत्येक वर्ष ख्यातिलब्ध साहित्यकारों के जन्मदिवस के अवसर पर भी कार्यक्रम आयोजित किए जाते है तथा युवा प्रतिभाओं को आगे लाने के लिए काव्य प्रतियोगिता, कहानी लेखन प्रतियोगिता, निबन्ध प्रतियोगिता का भी आयोजन किया जाता है. सम्पूर्ण भारत के साथ ही साथ जापान, सुरीनाम, जर्मनी व पाकिस्तान में भी अपने सदस्य बनाये हैं.

अनाथ बच्चों व असहाय वृद्धजनों के लिए स्नेहालय का शिलान्यास कर अस्थाई भवन में बहुत छोटे स्तर पर कार्य शुरु हो चुका है. संस्थान अभी अस्थायी तौर पर तीन जगहों पर पुस्तकालय संचालित कर रहा है. जिसमें हिंदी साहित्य के साथ ही साथ पाठ्यक्रमों की पुस्तकें भी उपलब्ध हैं. संस्थान के माध्यम से काफी निर्धन छात्र शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं. साथ ही महिलाओं को आत्म निर्भर बनाने के लिए उन्हें सिलाई, पेंटिग, कढ़ाई, गुड़िया, सजावाटी समान, खिलौना, अलग-अलग तरह के बच्चों के कपड़े बनाने की टेनिंग दी जाती है. प्राकृतिक आपदाओं पर संस्थान द्वारा सहयोग दिया जाता रहा है. शीघ्र ही संस्थान के स्वप्न स्नेहाश्रम को बनाने के लिए प्रयासरत है. जो सम्पूर्ण सामाजिक दायित्व का वाहक होगा.

सचिव
(गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी)

एक अपील

सम्माननीय

आप एक ख्यातिलब्ध साहित्यकार / पत्रकार / संपादक/ समाजसेवी/मनुष्य है. हिंदी /समाज के उत्थान के लिए कार्य करना हम सबका कर्तव्य है. हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए गठित विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान यद्यपि आर्थिक रुप से कोई मजबुत संस्थान नहीं है. फिर भी पं. मदन मोहन मालवीय के पदचिन्हों का अनुसरण करते हुए कठिन संकल्प व दृढ़ इच्छा शक्ति के साथ स्नेहाश्रम के लिए बीड़ा उठाया हैं. आप सोचेंगे कि मेरे दस रुपये, सौ रुपये देने मात्र से करोड़ों के बजट का प्रोजेक्ट कैसे पूर्ण होगा. बूंद -बूंद से घड़ा भरता, घड़े से गड्ढा, गड्ढें से तालाब और तालाब से नाला, नाले से नदिया और नदियों से सागर बनता है. आपका छोटा सा सहयोग किसी अनाथ को जीवन दे सकता है, किसी असहाय वृद्धजन की सेवा में मदद कर सकता है. आप स्वयं सहयोग करें, सदस्य बनें, और अपने परिचितों, दोस्तों, रिश्तेदारों से भी इससे जुड़ने को कहें. एक और एक मिलकर ग्यारह बनते हैं. हम संकल्पित है कि संस्थान को एक दिन विश्व स्तर का ख्याति प्राप्त संस्थान बनाएगे. इसके सम्मानों को विश्व स्तरीय ख्याति दिलाएगें और आपके छोटे से सहयोग को आजन्म नहीं भूलेगें. आप संस्थान के लिए सामग्री जैसे फर्नीचर, सिमेंट, छड़, बालू, ईंट, लेखन सामग्री, कम्प्यूटर, वाहन आदि देकर भी सहयोग कर सकते हैं. हम आपके सहयोग के लिए प्रतिक्षित हैं.

विजय लक्ष्मी विभा
अध्यक्ष, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान

शुभ कामनाओं सहित

गायत्री स्क्रीन प्रिन्टर्स

स्क्रीन प्रिंटिंग, ऑफसेट प्रिटिंग, फ्लैक्स प्रिटिंग एवं सभी प्रकार की डिजाइनिंग वर्क के लिए सम्पर्क करें।

प्रो0 ए.पी.उपाध्याय

पताः 359, मोहत्सिमगंज, इलाहबाद–3
मो0 9415369100

With Best Compliment From

Om Computer & Printer

All Types of Computer Job/Book Works & Printing Works

Add: 114/133,Badshahi Mandi, Allahabad
Mo.:9336847458, 0532-6454538

शुभ कामनाओं सहित (M):9336167385

विमल कम्प्यूटर

सभी प्रकार के डिजाइन वर्क, कम्प्यूटराइज्ड डेटा प्रोसेसिग, प्रिन्टिंग का कार्य होता है.

15,विवेकानन्द मार्ग, पन्ना लाल मार्केट (लक्ष्मी होटल) दुकान न02, इलाहाबाद

With Best Compliment From

AuthorisedDealer

Service & Spares

Ashok Leyland

Premier Power Equipment

Add:13, V.N.Marg, (Near Luxmi Hotel) Allahabad-211003
Ph.:(O)2400046,Mo.:9335035396

पत्रिका के समस्त पाठकों को हार्दिक बधाई

योगेन्द्र कुमार चौरसिया

सहायक प्रबंधक (सिविल) एवं योग प्रशिक्षक
नागर विमानन प्रशिक्षण कॉलेज,
(एयर पोर्ट अथारिटी ऑफ इंडिया), बमरौली,
इलाहाबाद

With Best Compliment From

R.K. Garg

President, Allahabad Branch

BUILDER'S ASSOCIATION OF INDIA

Saket Nagar Hanuman Mandir,
Preetam Nagar, Allahabad

सभी पाठकों को हार्दिक शुभकानाएं

दीप ट्रेवेल्स

Mo:9335108434, 9415189919
Ph.: 0532-2436980, 3259884

हमारे यहॉ पिकनिक पार्टी, शादी, विवाह, तीर्थ यात्रा हेतु टबेरा, क्वालिस, टाटा सूमो, वैन, इंडिका, इंडिगो एवं लक्जरी बसें हर समय उचित किराये पर उपलब्ध है.

प्रो० संतोष तिवारी

कुशवाहा मार्केट, भोला का पूरा, प्रीतम नगर, इलाहाबाद

डाक पंजीयन संख्याः एडी.306/2006–08 R.N.I.N0.-UPHIN2001/8380

एक कप चाय

क्या आप चाहते है?

कि आपका एक कप चाय का दाम किसी वृद्ध को दो वक्त की रोटी दे सके

किसी असहाय वृद्ध को सहारा दे सके?

किसी अनाथ की जिंदगी संवार सके

किसी अंधे को सहारा दे सके

किसी अनाथ को शिक्षा दे सके?

किसी असहाय महिला के तन को ढंग सके.

तो फिर देर किस बात की

आज से ही प्रतिदिन सिर्फ एक काप चाय बचाना शुरु कर दीजिए. अपनी यह बचत आप मासिक/छमाही/वार्षिक स्नेहाश्रम को भेज सकते हैं. अपना सहयोग विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद के नाम से धनादेश/डी.डी./बैंक ड्राफ्ट/चेक भेज सकते हैं अथवा संस्था के यूनियन बैंक ऑफ इडिया की किसी शाखा में खाता संख्या 538702010009259 में जमा कर डी.डी./बैंक ड्राफ्ट/चेक/नगद की छाया प्रति संस्था के कार्यालय में भेज सकते है.

लिखेंः संचालक

स्नेहाश्रम

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान

एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद,उ.प्र., कानाफुसीः ०६३३५१५५६४६

email: sahityaseva@rediffmail.com

Lokeh] laiknd] izdk'kd] eqnzd xksdqys'oj dqekj f}osnh }kjk HkkxZo izsl ckbZ dk ls eqfnzr djkdj ,y-vkbZ-th&93]uhe ljk;] eq.Msjk] bykgkckn ls izdkf'kr fd;k-vkj-,u-vkbZ ;wihfgUnh2001@8380 Mkdiath-la0% ,Mh-306@2006&08 **laikndः** xksdqys'oj dqekj f}osnh